Bharat BoudhIKS

खंड-15

नाट्य, नाद और भारतीय चेतना

सनातन ज्ञान : युवा उत्थान

भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित प्रतियोगी परीक्षाओं (नेट और यूपीएससी) के लिए एक संक्षिप्त पुस्तक

Scanned with OKEN Scanner

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि ।
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥

देवी सरस्वती को प्रणाम,
जो वर देने वाली और इच्छाओं को पूर्ण करने वाली हैं ।
हे देवी, जब मैं अपने अध्ययन की शुरुआत करूं,
कृपया मुझे हमेशा सही समझ की शक्ति दें।

Salutations to Devi Saraswati,
the giver of boons and fulfiller of wishes.
O Devi, When I begin my studies,
please bestow on me the capacity of right understanding always

Scanned with OKEN Scanner

विद्या भारती
उच्च शिक्षा संस्थान
Vidya Bharati
Uchcha Shiksha Sansthan

H-107A, Sector-12, Noida, Gautam Buddha Nagar, (Uttar Pradesh), PIN – 201301
Telephone : 0120-4338616, Mobile: 9999694251

E-mail : vbheducation@gmail.com, contact@vbuss.org
Twitter/Facebook/Instagram : @VBUSSOrg

http://vbuss.org

Drafting Committee / Team

- **Dr. Meenakshi Sharma**
  ACBR, University of Delhi
- **Dr. Mansi Yuvendar Chaudhary**
  Rajdhani College, University of Delhi
- **Dr. Shobhita Singal**
  MLNC, University of Delhi
- **Dr. Deepak Kumar**
  DRC, University of Delhi
- **Ms. Prakshi Soni**
  University of Delhi
- **Mr. Jitender Kumar**
  University of Delhi
- **Ms. Kajal Sharma**
  University of Delhi
- **Ms. Geeta Chaudhary**
  University of Delhi
- **Mr. Pradeep K. Pandey**
  University of Delhi

नाट्य, नाद और भारतीय चेतना

Bharat BoudhIKS

भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित प्रतियोगी परीक्षाओं (नेट और यूपीएससी)
के लिए एक संक्षिप्त पुस्तक

विद्या भारती
उच्च शिक्षा संस्थान
सा विद्या या विमुक्तये

किताबवाले
नयी दिल्ली-110002

अस्वीकरण

यह पुस्तक प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपराओं से संबंधित विभिन्न शास्त्रीय ग्रंथों, साहित्यिक स्रोतों और सार्वजनिक रूप से उपलब्ध सामग्रियों के अध्ययन एवं उनकी व्याख्या पर आधारित एक विद्वत्तापूर्ण कृति है। यद्यपि इसकी संरचना, विषयवस्तु या प्रवाह में कुछ तत्व पूर्ववर्ती कृतियों अथवा पारंपरिक साहित्य से मेल खा सकते हैं, किन्तु ये समानताएँ केवल संयोगवश हैं और विषय की प्रामाणिकता बनाए रखने के उद्देश्य से रखी गई हैं। हमने यह सुनिश्चित करने का हर संभव प्रयास किया है कि प्रस्तुत सामग्री तथ्यपरक, जानकारीपूर्ण और मूल स्रोतों के प्रति पूर्ण सम्मानभाव से युक्त हो। इस कृति में व्यक्तिगत अनुसंधान, सृजनात्मकता और शैक्षणिक परिश्रम के परिणामस्वरूप नवीन विश्लेषण, अद्यतन व्याख्याएँ, नए विषय, चित्रण और संदर्भ विस्तार सम्मिलित किए गए हैं। मौजूदा स्रोतों से प्राप्त सभी प्रेरणाएँ और संदर्भ पूर्ण सद्भावना एवं शैक्षणिक / ज्ञान-वितरण के उद्देश्य से प्रयोग किए गए हैं। इस पुस्तक का उद्देश्य किसी भी प्रकार के कॉपीराइट या बौद्धिक संपदा अधिकारों का उल्लंघन करना नहीं है। यदि अनजाने में किसी सामग्री से ऐसे किसी अधिकार का अतिक्रमण हुआ हो, तो सूचित किए जाने पर सम्पादक आवश्यक संशोधन या यथोचित स्वीकृति देने को तत्पर है।

© विद्या भारती उच्च शिक्षा न्यास, दिल्ली प्रांत

शीर्षक : **नाट्य, नाद और भारतीय चेतना**

सम्पादक : प्रो. राज किशोर शर्मा, जितेन्द्र कुमार

संस्करण : 2025

ISBN : 978-93-49531-87-1

मूल्य : 260/-

प्रकाशक:

किताबवाले

नई दिल्ली-110002

सहयोग:

विद्या भारती

उच्च शिक्षा संस्थान, नोएडा

मुद्रक:

जी.के. फाईन आर्ट प्रेस

पटपड़ गंज, नई दिल्ली

शुभकामना संदेश

प्रिय मित्रों,

यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है, साथ ही एक गहरा उत्तरदायित्व भी, कि मैं आपके समक्ष **'भारत बौद्धिक्स'** परियोजना को प्रस्तुत कर रहा हूँ। **भारत बौद्धिक्स विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान** द्वारा प्रारंभ किया गया एक राष्ट्रीय शैक्षिक अभियान है, जिसका मुख्य उद्देश्य हमारे युवाओं को गुणात्मक, सर्वांगीण और समग्र विकास की शिक्षा के साथ-साथ उनके मन और मस्तिष्क में भारत की बौद्धिक और सांस्कृतिक चेतना को पुनर्जीवित करना है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं, विज्ञान, दर्शन, शासन, आरोग्य और कला जैसे अनेक क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान परंपराएँ हजारों वर्षों से मानवता का मार्गदर्शन करती रही हैं। आज जब पूरी दुनिया एक संतुलित, नैतिक और समावेशी विकास मॉडल की खोज में है, ऐसे समय में हमारे प्राचीन ग्रंथ और विचार केवल इतिहास की धरोहर नहीं रह गए हैं, बल्कि वे प्रेरणा और नवाचार के जीवंत स्रोत बनकर सामने आ रहे हैं। भारत बौद्धिक्स का प्रयास है कि इस अमूल्य विरासत को आज के विद्यार्थियों के लिए सुलभ, समसामयिक और सार्थक रूप में प्रस्तुत किया जाए।

हमारे विशेषज्ञों द्वारा तैयार की गई **21 पुस्तकों की एक विशेष श्रृंखला,** इस परियोजना का मूल आकर्षण है। जिसे तीन प्रमुख क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है:

1. **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी**: इस खंड में वैदिक गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद, धातु विज्ञान, मंदिर वास्तुकला और पारंपरिक पर्यावरण ज्ञान जैसे विषयों के माध्यम से भारत की वैज्ञानिक परंपराओं को उजागर किया गया है।
2. **कला एवं मानविकी**: यह खंड नाट्यशास्त्र, शास्त्रीय भाषाओं, संगीत, साहित्यिक परंपराओं और प्रदर्शन कलाओं के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक समृद्धि और सौंदर्यबोध को प्रतिबिंबित करता है।

Scanned with OKEN Scanner

3. **समाजशास्त्र एवं अर्थनीति**: इसमें राजधर्म, अर्थशास्त्र, कृषि, ग्रामीण उद्योग, और शासन-प्रणाली जैसे विषयों को शामिल किया गया है, जो संतुलित और नैतिक समाज निर्माण की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

इन पुस्तकों के माध्यम से युवाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु हम **23 जनवरी 2026**, नेताजी **सुभाष चंद्र बोस जी की जयंती** के अवसर पर, एक **राष्ट्रीय परीक्षा** का आयोजन कर रहे हैं। यह परीक्षा पूरे देश के स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए खुली होगी। इस परीक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का मूल्यांकन करना नहीं है, बल्कि जिज्ञासा जगाना, आत्मचिंतन को प्रेरित करना, और भारतीय सभ्यता के गौरव के प्रति गर्व की भावना को जागृत करना है।

परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को **राष्ट्रीय भारत बौद्धिक्स कॉन्क्लेव** में आमंत्रित किया जाएगा। यह एक ऐसा मंच होगा जहाँ वे अपने विचार साझा करेंगे, मार्गदर्शकों से संवाद करेंगे और **भारतीय कला एवं समाज** भारतीय ज्ञान प्रणाली के जीवंत अनुभव से जुड़ सकेंगे। **भारत बौद्धिक्स** मात्र एक शैक्षिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि यह एक **यात्रा है: ज्ञान से बोध की ओर**। यह हमें हमारे मूल से जुड़ने, अपने भविष्य की पुनर्कल्पना करने और भारत की आत्मा को पुनः समझने का अवसर देता है।

मैं देशभर के सभी छात्रों, शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों से हार्दिक आग्रह करता हूँ कि वे इस पुनराविष्कार और परिवर्तन की यात्रा में हमारे सहभागी बनें। आइए, हम मिलकर एक ऐसी पीढ़ी के निर्माण में सहायक बनें, जो बौद्धिक रूप से जागरूक, संस्कृति के प्रति संवेदनशील और वैश्विक दृष्टिकोण से उत्तरदायी हो।

सादर, सस्नेह

प्रो. कैलाश सी. शर्मा
अध्यक्ष, विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान
अध्यक्ष, हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद
पूर्व कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

विषय सूची

प्रस्तावना 5
विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान 7
1. भूमिका 13
2. नाट्य और संगीत : एक दृष्टि 15
3. स्वाति मुनि और संगीत-वाद्यों की उत्पत्ति की कथा 17
4. भारतीय परंपरा की वैज्ञानिकता 17
5. आधुनिक पीढ़ी के लिए प्रेरणा 18
6. नाट्यशास्त्र में भाव-चेतना 18
7. नाट्यशास्त्र: भारतीय चेतना का प्रतिबिंब 20
8. नाट्यशास्त्र की सार्वभौमिकता 22
9. गीत और वाद्य का पारस्परिक सौंदर्य 24
10. भारतीय संगीतशास्त्र में नाद, श्रुति और स्वर का दार्शनिक आयाम 24
11. गीत और वाद्य की अन्तर्निहता 26
12. श्रुति - संगीत की आधारशिला 28
13. भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रमुख शैलियाँ 39
14. भारतीय वाद्यों का वैभव और प्रकार 40
15. नाट्य, नर्तन, नृत्य और नृत्त – एक ही विधा के विभिन्न रूप 42
16. ताण्डव और लास्य का अनुशासित स्वरूप और लोकनृत्य 44
17. लोकनृत्य और शास्त्रीय नृत्य 47
18. नाट्यशास्त्र और विश्व रंगमंच पर उसकी परंपरा का प्रभाव 49
19. लोकनृत्य का सौंदर्य और जीवन्तता 51
20. कालिदास का योगदान 52
21. महाकवि भवभूति और उनकी कृतियाँ 55
22. भवभूति का काव्यशास्त्र पर प्रभाव 56
23. संस्कृत साहित्य की महाकाव्य और नाट्य परंपरा 57
24. प्राकृत और क्षेत्रीय भाषाओं का विकास 57
25. मध्यकालीन और आधुनिक भारतीय साहित्य 60
26. निष्कर्ष 64
बहुविकल्पीय प्रश्न 66
अनुशंसित पठन सामग्री 68
उत्तर-दर्शिका 87

Scanned with OKEN Scanner

"The history of India for many centuries had been happier, less fierce, and more dreamlike than any other history. In these favorable conditions, they built a character -meditative and peaceful and -a nation of philosophers such as could nowhere have existed except in India."

Source: The Outline of History by H. G. Wells

...

"In Indian wisdom, tolerance is not simply a matter of policy but an article of faith."

Source: Encyclopaedia of Hinduism-by Sunil Sehgal

...

H.G. Wells
(1866-1946)

Eminent English prolific novelist, journalist, sociologist and philosopher, who was fluent in many genres. His early specialisation was in Biology, and his thinking was woven mainly around a Darwinian context. Wells is best known for his science fictions, and the most noted works include The Time Machine, The Island of Doctor Moreau, The Invisible Man and The War of the Worlds. He was nominated for the Nobel Prize in Literature four times.

प्रस्तावना

यह पुस्तक भारतीय कला, साहित्य और संगीत की समृद्ध और बहुआयामी परंपराओं की गहरी जाँच करती है, जो उनकी आध्यात्मिकता, संस्कृति और मानव अनुभव से जुड़े हैं। प्राचीन विद्वानों जैसे भरतमुनि की शाश्वत ज्ञान से प्रेरित होकर, यह नाटकशास्त्र, संगीत और नृत्य की जटिल प्रणालियों पर प्रकाश डालती है, जिन्होंने भारत की कला धरोहर को आकार दिया। भारतीय शास्त्रीय संगीत, जो गहरे आध्यात्मिक आधारों पर आधारित है, केवल कलात्मक अभिव्यक्ति से परे होकर भावनात्मक गहराई और आत्मिक जागरण का मार्ग प्रस्तुत करता है। भारतीय कला रूपों में ध्वनि, राग, ताल और गति का एकत्रित रूप एक समग्र अनुभव प्रस्तुत करता है, जो समय और संस्कृतियों के बीच गूंजता रहा है।

महान कवियों जैसे कालिदास और भवभूति के कार्य, और शास्त्रीय नृत्य का शाश्वत प्रभाव, इस परंपरा को और भी समृद्ध करते हैं, जो मानव भावनाओं, मूल्यों और दार्शनिक विचारों का सार प्रस्तुत करते हैं। यह पुस्तक इन विभिन्न कलात्मक तत्वों - संगीत, नृत्य, साहित्य और नाटक - को एकत्रित करने का प्रयास करती है और उनके आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डालती है।

जब हम इन परंपराओं के पवित्र और कलात्मक आयामों का अन्वेषण करते हैं, तो यह पुस्तक उनके शाश्वत प्रासंगिकता का प्रतीक है, जो समकालीन समाज को प्रेरित करती है और आने वाली पीढ़ियों के लिए मूल्यवान पाठ प्रस्तुत करती है।

Scanned with OKEN Scanner

"India- the land of Vedas, the remarkable works contain not only religious ideas for a perfect life, but also facts which science has proved true.

Electricity, radium, electronics, airship, all are known to the seers who founded the Vedas."

Source: Indian systems of psychotherapy by Prakash Veereshwar.

...

Ella Wheeler Wilcox
(1850-1919)

Prolific American mystic poetess and journalist. She was instrumental in the establishment of the Rosicrucian Movement in twentieth-century America and is best known for her 'Poems and Passion'

विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान

विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान (VBUSS) भारतीय परंपराओं में निहित एक समग्र, मूल्य-आधारित ढांचे के अंतर्गत शैक्षणिक उत्कृष्टता, चरित्र निर्माण और राष्ट्र-निर्माण पर बल देते हुए गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। **"सा विद्या या विमुक्तये"** - अर्थात् "वह ज्ञान जो मुक्त करता है" - इस प्रेरणादायक ध्येय वाक्य से संचालित होकर, VBUSS ऐसी पीढ़ी के निर्माण का संकल्प करता है जो न केवल शैक्षणिक दृष्टि से दक्ष हो, अपितु सामाजिक रूप से उत्तरदायी एवं आध्यात्मिक रूप से जागरूक भी हो।

संस्थान उच्च शिक्षा के मूल तत्वों के रूप में समालोचनात्मक चिन्तन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नैतिक जीवन और गहन सांस्कृतिक समझ को प्रमुखता प्रदान करता है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में विस्तृत शैक्षणिक तंत्र के माध्यम से VBUSS ने उल्लेखनीय प्रभाव डाला है। यह संस्था अनेक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों, डिग्री संस्थानों तथा व्यावसायिक केन्द्रों का संचालन कर, देश में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता तथा उपलब्धता को सुदृढ़ करने का कार्य कर रही है।

उपलब्धियों की दृष्टि से भी VBUSS ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रशंसनीय प्रगति की है। संस्थान ने सम्पूर्ण भारत में महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों का एक सुदृढ़ तंत्र स्थापित किया है, जो विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कला एवं सामाजिक विज्ञान जैसे विविध क्षेत्रों में शैक्षणिक मार्गदर्शन प्रदान करता है। कठोर पाठ्यक्रमों और अनुसंधान पहलों के माध्यम से निरंतर शैक्षणिक उत्कृष्टता को सुनिश्चित करते हुए, इसने शिक्षा क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु मान्यता प्राप्त की है।

विद्या भारती ने वंचित समुदायों को शिक्षा उपलब्ध कराकर सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देने में भी सक्रिय भूमिका निभाई है, जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच का अंतर कम हुआ है।

अपने सतत प्रयासों द्वारा VBUSS भारत के भविष्य को कुशल, ज्ञानसम्पन्न एवं नैतिक नेतृत्व प्रदान कर रहा है। आधुनिक शैक्षणिक विषयों का प्राचीन भारतीय ज्ञान से समन्वय कर, VBUSS राष्ट्र के प्रति समर्पित, जिम्मेदार और जागरूक नागरिकों के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

VBUSS प्राचीन भारतीय ज्ञान को पुनः जागृत कर समकालीन शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करने के राष्ट्रीय आंदोलन में अग्रदूत के रूप में प्रतिष्ठित है। प्रस्तुत पुस्तक इस महान अभियान में एक विनम्र योगदान है। यह भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख विचारों, दार्शनिक अवधारणाओं एवं विभिन्न शास्त्रों को एक सुलभ एवं विचारोत्तेजक स्वरूप में संकलित करता है।

नाट्य, नाद और भारतीय चेतना

भूमिका

भारतीय कला, साहित्य एवं सौंदर्यशास्त्र की दिव्य परंपरा में नाट्यशास्त्र एक अद्वितीय और अविस्मरणीय ग्रंथ है, जिसकी जड़ें स्वयं आदि नर्तक-नटराज शिव की आराधना में प्रतिष्ठित हैं।

शिव तांडव स्तोत्र में कहा गया है-

"जटाटवी गलज्जल प्रवाह पावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।"

सरल अर्थ:

"जिनकी जटाओं से बहती गंगा की धारा सारे ब्रह्माण्ड को पवित्र कर रही है, और जिनके गले में विशाल सर्पों की माला झूल रही है-ऐसे महादेव की मैं वंदना करता हूँ।"

यह श्लोक रावणकृत शिव तांडव स्तोत्र का प्रसिद्ध प्रारंभिक श्लोक है, जिसका सौंदर्य, अलंकारिता और अर्थ भारतीय तांडव परंपरा व नाट्यकला की गहराई से जुड़ा हुआ है। इस श्लोक में *महादेव शिव* के तांडव रूप का अद्भुत चित्रण है। शिव का यह तांडव न केवल नृत्य है, बल्कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड की रचना, स्थिति और संहार का प्रतीक है-यही तांडव आगे चलकर भारतीय *नाट्य* परंपरा (नाट्यशास्त्र) की आधारभूमि बना।

भरतमुनि द्वारा प्रणीत यह ग्रंथ न केवल नाट्यकला का वैज्ञानिक तथा दार्शनिक आधार प्रस्तुत करता है, बल्कि भारतीय नृत्य, संगीत एवं नाटक परंपरा का सबसे प्राचीन और प्रमाणिक ग्रंथ भी है। ऐसा कहा जाता है कि ब्रह्मा ने वेदों के सार से नाट्यवेद की रचना कर मानव समाज को मनोरंजन, शिक्षा, और आध्यात्मिक जागरण का एक सशक्त माध्यम प्रदान किया।

Scanned with OKEN Scanner

नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में स्वयं ब्रह्मा के श्रीमुख से इसकी उत्पत्ति का वर्णन मिलता है:

"अथ ब्रह्मा प्रजापतये नाट्यवेदं प्रोवाच।" (नाट्यशास्त्र, अध्याय 1, श्लोक 7)

अर्थात ब्रह्मा ने देवताओं के आग्रह पर नाट्यवेद की रचना की ताकि देवताओं, असुरों, गंधर्वों और मानवों के सुख-दुःख, धर्म-अधर्म आदि का दृश्य प्रदर्शन हो सके। इस नाट्यवेद के चारों वेदों से निर्माण का वर्णन है-ऋग्वेद से पाठ (संवाद), यजुर्वेद से अभिनय (स्थापना), सामवेद से गान (संगीत) तथा अथर्ववेद से रस एवं भाव।

इस नाट्यवेद की व्यावहारिक संरचना और विस्तार भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में सुस्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

विशेष उल्लेखनीय है कि नाट्यशास्त्र के सिद्धांत भारत की सीमाओं तक सीमित नहीं रहे; प्राचीन व्यापार मार्गों के माध्यम से इस ग्रंथ की सांस्कृतिक गूंज दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों-बाली, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया, म्यांमार, जापान और चीन-तक पहुँची। इन क्षेत्रों की नाट्य और नृत्य शैलियों में नाट्यशास्त्रीय अनुशासन और भारतीय काव्यग्रंथों, विशेषकर रामायण और महाभारत के घटनाचक्र, की छाया स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

दक्षिण भारत की राजसत्ताओं ने नाट्यकला को न केवल संरक्षण दिया, अपितु कई शासक स्वयं नाटककार, अभिनेता और कलाप्रेमी बने। इस परंपरा का उत्कर्ष शूद्रक के मृच्छकटिकम् (चतुर्थ शती), हर्षवर्धन की रत्नावली (सप्तम शती), महेन्द्रविक्रम वर्मा का भगवदज्जुकम्, तथा विशाखदत्त का मुद्राराक्षस (नवम शती) जैसी कालजयी कृतियों में स्पष्ट होता है। इन ग्रंथों ने भारतीय रंगमंच को साहित्यिक और कलात्मक दृष्टि से समृद्ध किया। भारतीय जनमानस में नाट्यशास्त्र की परंपरा केवल शास्त्रीय रंगमंच तक सीमित नहीं रही; अपितु रामलीला, कृष्णलीला, नौटंकी, तमाशा, जात्रा, कथकली, भरतनाट्यम्, कत्थक आदि लोकनाट्य एवं नृत्यशैलियों के माध्यम से भी इस शास्त्र के सिद्धांत पीढ़ी दर पीढ़ी जीवित रहे।

नाट्यशास्त्र के अनुसार–

"न नृणां प्रवृत्तिरस्मिन्ननृता नाप्यधार्मिकी।
न च शोभनमन्यत्र दृश्यते सभ्यमन्वितम्॥"

(नाट्यशास्त्र, अध्याय 1, श्लोक 114)

अर्थात् नाट्यशास्त्र में ऐसा कुछ नहीं जो लोकधर्म से विपरीत हो अथवा जो सभ्यता व सौंदर्य को न शोभे। इन लोक-रूपों में धार्मिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों का अद्भुत संगम दिखाई देता है, जो नाट्यशास्त्र के मूल सौंदर्यबोध एवं मानव-चेतना के अमूर्त पक्षों का सहज निरूपण करते हैं।

भरतमुनि ने अपने ग्रंथ के माध्यम से केवल रंगकला का स्वरूप ही नहीं रचा, अपितु उन्होंने सौंदर्यशास्त्र, धर्म, नीति, दर्शन, और मानव मनोविज्ञान का भी संतुलित समन्वय प्रस्तुत किया। नाट्य का उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहीं है; इसका परम लक्ष्य मानव की चेतना को जागृत कर, उसे जीवन के गूढ़ रहस्यों का साक्षात्कार कराना है। नाट्यशास्त्र में उल्लिखित नवरस-हर्ष, श्रृंगार, हास्य, करुणा, वीर, रौद्र, भयानक, बीभत्स, अद्भुत-मानव हृदय के विविध भावों की परिपूर्ण अभिव्यक्ति हैं, जिनके माध्यम से दर्शकों के भीतर आत्मिक संवेदनाओं की सृष्टि होती है।

"रसात् स्याद् भावसम्भूतिः भावात्स्थायि प्रवर्तते।
स्थायिभावाद्रसं जातं ततोऽन्यं भावजं विदुः॥"

(नाट्यशास्त्र, अध्याय 6, श्लोक 31)

अर्थात रस भाव से उत्पन्न होता है, भाव स्थायिभाव से, और स्थायिभाव के बिना रस की सृष्टि नहीं होती।

नाट्यशास्त्र केवल कला का ग्रंथ नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा है। इसकी विषयवस्तु भारतीय दर्शन, मनोविज्ञान एवं सौंदर्यबोध की पराकाष्ठा है, जो मनोरंजन के साथ-साथ आत्मविकास और सामाजिक जागरण का भी सशक्त साधन बनती है। यह परंपरा केवल रंगमंच की सीमाओं तक नहीं बंधी; इसने काल-सीमा और भूगोल की रेखाओं को पार कर, सम्पूर्ण मानवता के चिरंतन प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत किया है। इसी कारण नाट्यशास्त्र भारतीय जीवन-दर्शन का अविभाज्य अंग बना हुआ है।

नाट्य और संगीत : एक दृष्टि

भारत की सांस्कृतिक और वैज्ञानिक परंपरा में *नाट्यशास्त्र* और *संगीत-विद्या* का महत्वपूर्ण स्थान है। यह परंपरा न केवल कला और भावनाओं का अद्भुत संगम है, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण और प्रयोगशीलता का भी प्रमाण है। प्राचीन भारत में संगीत के उपकरण तात्त्विक या सैद्धांतिक आधार पर ही नहीं बने, बल्कि उनके निर्माण में निरीक्षण, परीक्षण और प्रयोग की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

Scanned with OKEN Scanner

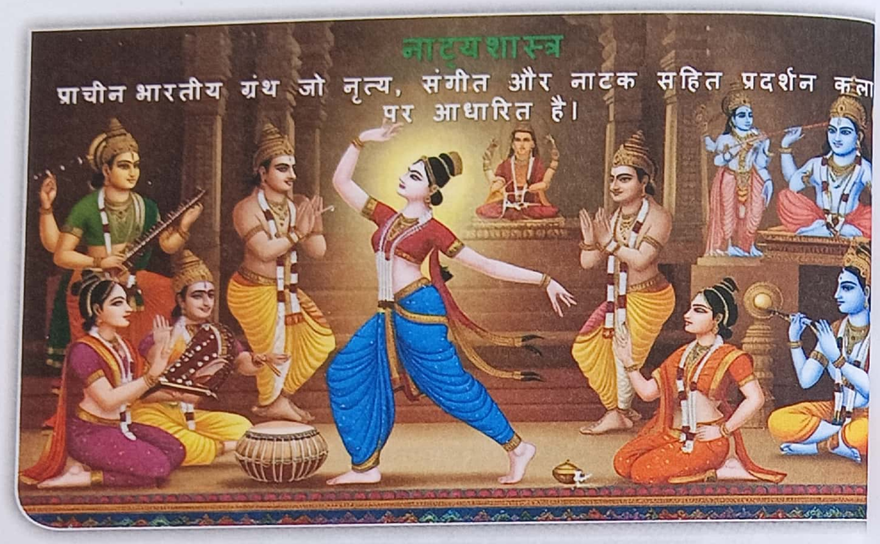

प्रतीकात्मक चित्र

भरतमुनि का *नाट्यशास्त्र* इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। इस ग्रंथ के 33वें अध्याय में मृदंग और अन्य वाद्य यंत्रों की उत्पत्ति और उनके निर्माण का विस्तृत वर्णन मिलता है। इन वाद्य यंत्रों का निर्माण मात्र कल्पना नहीं था, बल्कि प्राकृतिक घटनाओं और उनके गहन निरीक्षण पर आधारित था।

प्रतीकात्मक चित्र

स्वाति मुनि और संगीत-वाद्यों की उत्पत्ति की कथा

प्राचीन समय में **स्वाति** नामक मुनि ने संगीत की उत्पत्ति के एक अद्भुत रहस्य का अवलोकन किया। एक दिन जलाशय के पास, जब वर्षा की बूंदें कमल के पत्तों पर गिरने लगीं, तो भिन्न-भिन्न ध्वनियाँ उत्पन्न हुईं। बड़े पत्तों से गंभीर ध्वनि, मध्यम पत्तों से मधुर ध्वनि, और छोटे पत्तों से हृदयस्पर्शी ध्वनि निकल रही थी। इस प्राकृतिक घटना से प्रेरित होकर, स्वाति मुनि ने इन ध्वनियों को कृत्रिम रूप से पुनः उत्पन्न करने के लिए प्रयोग प्रारंभ किया।

ध्वनियों की विविधता को समझते हुए, उन्होंने पत्तों और पानी की धाराओं के स्थान पर अन्य साधनों का उपयोग किया। इस प्रक्रिया में **मृदंग**, **प्रणव**, **दर्दुर** और **मुरज** जैसे वाद्य यंत्रों का आविष्कार हुआ। यह दृष्टांत न केवल संगीत-विद्या के प्रति भारतीय दृष्टिकोण को दर्शाता है, बल्कि यह भी बताता है कि भारतीय संस्कृति में तर्क और प्रयोग को किस हद तक महत्व दिया गया।

वाद्य यंत्र

भारतीय परंपरा की वैज्ञानिकता

यह कथा इस बात का साक्षात प्रमाण है कि भारतीय संस्कृति में हर रचनात्मक प्रक्रिया तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित थी। भारत में विचारों की स्वतंत्रता और

Scanned with OKEN Scanner

प्रतीकात्मक चित्र

भरतमुनि का *नाट्यशास्त्र* इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। इस ग्रंथ के 33वें अध्याय में मृदंग और अन्य वाद्य यंत्रों की उत्पत्ति और उनके निर्माण का विस्तृत वर्णन मिलता है। इन वाद्य यंत्रों का निर्माण मात्र कल्पना नहीं था, बल्कि प्राकृतिक घटनाओं और उनके गहन निरीक्षण पर आधारित था।

प्रतीकात्मक चित्र

स्वाति मुनि और संगीत-वाद्यों की उत्पत्ति की कथा

प्राचीन समय में **स्वाति** नामक मुनि ने संगीत की उत्पत्ति के एक अद्भुत रहस्य का अवलोकन किया। एक दिन जलाशय के पास, जब वर्षा की बूंदें कमल के पत्तों पर गिरने लगीं, तो भिन्न-भिन्न ध्वनियाँ उत्पन्न हुईं। बड़े पत्तों से गंभीर ध्वनि, मध्यम पत्तों से मधुर ध्वनि, और छोटे पत्तों से हृदयस्पर्शी ध्वनि निकल रही थी। इस प्राकृतिक घटना से प्रेरित होकर, स्वाति मुनि ने इन ध्वनियों को कृत्रिम रूप से पुनः उत्पन्न करने के लिए प्रयोग प्रारंभ किया।

ध्वनियों की विविधता को समझते हुए, उन्होंने पत्तों और पानी की धाराओं के स्थान पर अन्य साधनों का उपयोग किया। इस प्रक्रिया में **मृदंग**, **प्रणव**, **दर्दुर** और **मुरज** जैसे वाद्य यंत्रों का आविष्कार हुआ। यह दृष्टांत न केवल संगीत-विद्या के प्रति भारतीय दृष्टिकोण को दर्शाता है, बल्कि यह भी बताता है कि भारतीय संस्कृति में तर्क और प्रयोग को किस हद तक महत्व दिया गया।

वाद्य यंत्र

भारतीय परंपरा की वैज्ञानिकता

यह कथा इस बात का साक्षात प्रमाण है कि भारतीय संस्कृति में हर रचनात्मक प्रक्रिया तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित थी। भारत में विचारों की स्वतंत्रता और

प्रत्यक्ष प्रयोगों की परंपरा उस समय से चली आ रही है, जब पश्चिमी जगत् में यह मात्र कल्पना थी। भारतीय संगीत के वाद्य यंत्र केवल मनोरंजन के उपकरण नहीं थे, बल्कि उनके निर्माण में भौतिक विज्ञान, ध्वनि विज्ञान और सौंदर्यशास्त्र का अद्भुत समन्वय था।

प्रतीकात्मक चित्र

आधुनिक पीढ़ी के लिए प्रेरणा

भारतीय संगीत और नाट्यशास्त्र की वैज्ञानिक परंपराएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं। इनसे आधुनिक पीढ़ी को यह समझने में मदद मिलती है कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर केवल परंपरा का हिस्सा नहीं, बल्कि तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रमाण है। यह ज्ञान हमें परानुकरण और हीनताबोध से मुक्त कर स्वावलंबन और स्वाभिमान की अनुभूति कराता है।

नाट्यशास्त्र और *संगीत-विद्या* भारतीय ज्ञान परंपरा के ऐसे स्तंभ हैं, जो न केवल अतीत की गौरवशाली विरासत को जीवंत रखते हैं, बल्कि आधुनिक समय में भी भारतीय कला और विज्ञान को दिशा प्रदान करते हैं।

नाट्यशास्त्र में भाव-चेतना

आचार्य भरत के *नाट्यशास्त्र* को भारतीय नाट्यकला और सौंदर्यशास्त्र का आधारभूत ग्रंथ माना जाता है। इसे 36 अध्यायों में विभाजित किया गया है, जिसमें नाट्य और रूपक

जैसे दो मुख्य प्रकारों की व्याख्या की गई है। रूपक के दस प्रकारों में से नाटक एक प्रमुख प्रकार है, जिसे आज की चलचित्र विधा का जनक भी कहा जा सकता है।

नाट्यशास्त्र और स्व-आलोकित चेतना

भरतमुनि के अनुसार, नाटक का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि वह दर्शकों को सौंदर्य और भावनाओं की उच्चतम अवस्था तक ले जाता है। *ऋग्वेद* और *अथर्ववेद* में भी इसकी समीक्षा की गई है, जबकि *उपनिषदों* में*रस* को स्व-आलोकित चेतना से जोड़ा गया है। यह चेतना वह अवस्था है, जहाँ व्यक्ति अपनी आंतरिक भावनाओं और मूल्यों का साक्षात्कार करता है।

नाट्यशास्त्र में **विभाव**, **अनुभाव** और **व्यभिचारी** भाव के संयोजन से रस उत्पन्न होता है। यह संयोजन दर्शकों को भावनाओं की गहराई में डुबो देता है, जहाँ वे सौंदर्य, करुणा, हास्य, या अन्य भावनाओं को गहनता से अनुभव करते हैं। यह रसोत्पत्ति नाटक के कलाकार और दर्शकों के बीच एक सेतु का कार्य करती है, जहाँ दोनों एक साझा अनुभव का हिस्सा बनते हैं।

चेतना का समीकरण: सत्, चित्, आनंद

नाटक केवल बाहरी अभिनय तक सीमित नहीं है; इसका चरम उद्देश्य दर्शकों को चेतना के गहनतम स्तर तक पहुँचाना है। भरतमुनि के अनुसार, नाट्य का अंतिम लक्ष्य सत् (सत्य), चित् (चेतना), और आनंद (आनंद) की त्रयी तक पहुँचाना है। यह त्रयी भारतीय दर्शन में *सच्चिदानंद* के रूप में जानी जाती है।

- **सत् (सत्य):** नाटक के माध्यम से सत्य और यथार्थ का चित्रण।
- **चित् (चेतना):** दर्शकों में आंतरिक जागरूकता और भावनात्मक गहराई उत्पन्न करना।
- **आनंद:** नाटक के चरम अनुभव से दर्शकों को आनंद की अनुभूति कराना, जो उनके भीतर की चेतना को प्रकाशित करता है।

अभिनय की पराकाष्ठा और दर्शक की भूमिका

भरतमुनि के अनुसार, एक कलाकार का अभिनय तभी सफल माना जाता है, जब वह दर्शकों को उनकी आत्मा के गहन मूल्यों तक पहुँचा सके। दर्शक नाटक देखते समय रोते,

Scanned with OKEN Scanner

हँसते, और गाते हैं, लेकिन इन भावनाओं की गहराई उन्हें अंततः आत्मज्ञान और चेतना के उच्चतम स्तर तक ले जाती है।

नाट्यशास्त्र: भारतीय चेतना का प्रतिबिंब

भरतमुनि का नाट्यशास्त्र केवल कला का ग्रंथ नहीं है; यह मानव चेतना के विभिन्न स्तरों को समझने और उन्हें व्यक्त करने का माध्यम है। इसके द्वारा, नाटक और उसके कलाकार मानव मन के विविध पक्षों को उजागर करते हैं और दर्शकों को जीवन की सत्यता और उसकी गहनता का अनुभव कराते हैं।

इस प्रकार, *नाट्यशास्त्र* भारतीय चेतना और सौंदर्यशास्त्र का एक ऐसा ग्रंथ है, जो न केवल कला को परिभाषित करता है, बल्कि व्यक्ति को आत्म-ज्ञान और आनंद की अवस्था तक पहुँचाने का मार्ग भी प्रशस्त करता है।

नाट्यशास्त्र की पृष्ठभूमि और प्रयोजन

भारतीय नाट्यकला का उद्भव भी अन्य समस्त विद्याओं और कलाओं की भाँति वेदों से ही संबद्ध है। इसके महान आचार्य भरतमुनि ने अपने ग्रंथ नाट्यशास्त्र में नाट्यविद्या की उत्पत्ति का विस्तार से निरूपण किया है। उनके अनुसार जब संसार में धर्म का ह्रास होने लगा, समाज में असंतुलन, दुख, हिंसा, वासनात्मक प्रवृत्तियाँ तथा नैतिक पतन बढ़ गया, तब देवर्षियों ने ब्रह्माजी से विनती की कि वे ऐसा कोई उपाय बतावें जो सामान्य जनमानस के लिए न केवल मनोरंजन का साधन बने, अपितु उनके मनोमालिन्य का शमन कर उन्हें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के पथ पर प्रवृत्त करने में भी सहायक हो।

ब्रह्मा ने इस अनुरोध को स्वीकार करते हुए ध्यानावस्था में चारों वेदों का मनन किया और नाट्यशास्त्र की रचना की, जिसे उन्होंने **'पंचमवेद'** की संज्ञा दी। इस नवीन वेद में उन्होंने चारों वेदों के तत्त्वों का समावेश किया:

- **ऋग्वेद** से पाठ्य (संवाद एवं कथा-वस्तु),
- **सामवेद** से गीत (स्वर, लय और संगीत),
- **यजुर्वेद** से आंगिक अभिनय (नृत्य, हाव-भाव एवं मुद्राएँ),
- **अथर्ववेद** से रस (भावनाओं एवं अनुभवों की अभिव्यक्ति)।

इस प्रकार, नाट्यविद्या न केवल दृश्य-श्रव्य कला है, बल्कि वेदों की तत्व-संपदा से अनुप्राणित एक आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक साधना भी है, जिसका उद्देश्य केवल तात्कालिक मनोरंजन न होकर लोकमंगल, चारों पुरुषार्थों की उपलब्धि तथा मानवीय चेतना का जागरण है।

भरतमुनि स्वयं कहते हैं–

"नाट्यं भिन्नरसं लोके न प्रतीयेत कर्हिचित्।"

(नाट्यशास्त्र, अध्याय 1, श्लोक 120)

("नाट्य ऐसी विद्या है जिसमें लोक के विविध रस, भाव और अनुभव प्रकट होते हैं।") इस दृष्टि से नाट्यशास्त्र भारतीय जीवन-दर्शन का दर्पण है, जो लोक और परलोक दोनों की सिद्धि का साधन बनता है।

जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च।
यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि ॥

(नाट्यशास्त्र 1.18)

भरतमुनि को नाट्य के प्रयोग का अधिकार सौंपा गया, ताकि यह मानव जीवन के विविध पक्षों का अभिव्यक्तिकरण कर सके और जनसामान्य के कल्याण के लिए उपयोगी हो।

नाट्य का प्रयोजन

भरतमुनि के अनुसार, नाट्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन के समस्त पहलुओं का प्रतिनिधित्व करना है। नाट्य जीवन के शुभ-अशुभ कर्मों, भावों और चरित्रों का प्रतिबिंब है।

नाट्य के मुख्य प्रयोजन

- **लोककल्याण**: नाट्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे पुरुषार्थों की प्रेरणा देता है।
- **मनोरंजन**: सामान्य जनों के दुःख और श्रम से मुक्ति प्रदान करता है।
- **शिक्षा**: यह जीवन के शुभ-अशुभ कर्मों का प्रदर्शन कर नैतिकता और आदर्शों का प्रचार करता है।
- **संवेदनशीलता का विकास**: रसों और भावों के माध्यम से दर्शकों को उनके आंतरिक और बाह्य अनुभवों से जोड़ता है।
- **सामाजिक संतुलन**: दुष्टों के दमन, वीरों के उत्साहवर्धन, और असंतुलित समाज के सुधार में सहायक है।

Scanned with OKEN Scanner

नाट्य का व्यापक प्रभाव

भरतमुनि ने नाट्य को इस प्रकार परिभाषित किया है:

"त्रैलोक्यस्यास्य सर्वस्य नाट्यं भावानुकीर्तनम्।" *(ना. शा. 1/107)*

अर्थात, नाट्य पूरे विश्व के शुभ-अशुभ कर्मों और भावों का समावेश करता है।

यह धर्म, काम, और अर्थ की अनुभूति कराने के साथ-साथ दुःख, श्रम और शोक से पीड़ितों को शांति प्रदान करता है। तपस्वियों के लिए नाट्य आत्मचिंतन का माध्यम बनता है, तो उत्साही वीरों के लिए यह प्रेरणा का स्रोत बनता है।

नाट्यशास्त्र केवल एक कला-ग्रंथ नहीं है; यह एक दार्शनिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना है, जो लोकमंगल और आत्मसाक्षात्कार का माध्यम बनता है। यह न केवल भारत की प्राचीन परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों को सहेजता है, बल्कि इसे मानव-जीवन के हर पहलू से जोड़कर सार्वभौमिकता प्रदान करता है।

नाट्यशास्त्र की सार्वभौमिकता

भरतमुनि द्वारा रचित *नाट्यशास्त्र* न केवल भारतीय कला का आधारभूत ग्रंथ है, बल्कि यह मानव जीवन की विविध भावनाओं, क्रियाओं और ज्ञान का सार भी प्रस्तुत करता है। इसके मूल में यह विचार निहित है कि नाट्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को उपदेश और प्रेरणा देने वाला एक साधन है।

सार्वभौमिक स्वरूप

भरतमुनि ने कहा–

"न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
नासौ योगो न तत्कर्म यन्नाट्येऽस्मिन् न दृश्यते।।" *(ना. शा. 1/16)*

अर्थात्, ऐसा कोई शास्त्र, शिल्प, कला, विद्या, योग या कर्म नहीं है, जो नाट्य में समाहित न हो। इस नाट्यशास्त्र में धर्म, यश, आयु और बुद्धि को बढ़ाने की शक्ति है।

नाट्यकला की परिवर्तनशील यात्रा: देशकाल के संदर्भ में

भरतमुनि ने नाट्य के सभी पक्षों को व्यवस्थित किया, लेकिन परवर्ती आचार्यों ने इसे

समय और स्थान के अनुरूप विकसित किया। नाट्य या रूपक के भेदों का वर्गीकरण कथावस्तु, नायक, और रस के आधार पर किया गया।

रूपक के दस भेद (संगीतसारसंग्रह, पृ. - 65)

1. **नाटक**
2. **प्रकरण**
3. **भाण**
4. **प्रहसन**
5. **डिम**
6. **व्यायोग**
7. **समवकार**
8. **वीथी**
9. **अंक**
10. **ईहामृग**

केदार रागिनी

कमोदिनी रागिनी

दीपिका राग

धन्याश्री रागिनी

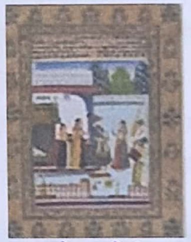
मलकोसा रागिनी

रागमलिका ग्रंथ

इसके अतिरिक्त 18 उपरूपक या देशीय रूपक भी विकसित हुए। यह दर्शाता है कि नाट्य की व्यापकता में विश्व की सभी कलाएँ समाहित हो सकती हैं।

भरतमुनि के वचनों का प्रभाव

भरतमुनि के अनुसार–

"धर्म्यं यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धिविवर्द्धनम्।
लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद् भविष्यति।"
(ना. शा. 1/14-15)

इस नाट्यशास्त्र का उद्देश्य केवल धार्मिक, सामाजिक, और नैतिक आदर्शों की स्थापना करना नहीं, बल्कि जनमानस को मानसिक और शारीरिक विश्रांति प्रदान करना भी है। यह उत्तम, मध्यम, और अधम सभी प्रकार के लोगों के लिए लाभदायक है।

Scanned with OKEN Scanner

भरतमुनि द्वारा प्रतिपादित *नाट्यशास्त्र* एक सार्वकालिक ग्रंथ है, जो कला, संस्कृति, और मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को समाहित करता है। यह केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि समस्त विश्व के लिए प्रेरणा का स्रोत है। नाट्यशास्त्र के सिद्धांत धर्म, ज्ञान, और सौंदर्य की खोज को एकजुट कर मानवता के उत्थान का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

गीत और वाद्य का पारस्परिक सौंदर्य

आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र में गीत को नाट्य का प्रमुख अंग माना है। उन्होंने गीत के साथ वाद्य की भूमिका को उपरञ्जक अर्थात् गीत को अलंकृत करने वाला बताया है। यद्यपि नाट्य में नृत्त (शुद्ध नृत्य) को स्वतंत्र रूप से स्वीकार किया गया है, लेकिन आचार्य भरत ने इसे गीत के साथ उस प्रकार सम्बद्ध नहीं किया, जैसे कि परवर्ती आचार्यों ने किया।

परवर्ती आचार्यों ने गीत, वाद्य, और नृत्त को एक साथ समन्वित करके *संगीत* की परिभाषा दी। इस दृष्टि से, गीत और वाद्य की अन्तरंगता न केवल नाट्यशास्त्र में, बल्कि भारतीय संगीत के विकास में भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

भारतीय संगीतशास्त्र में नाद, श्रुति और स्वर का दार्शनिक आयाम

भारतीय संगीतशास्त्र में नाट्यकला से पृथक् होकर संगीत ने एक स्वतंत्र एवं विशिष्ट आचार्य-परंपरा को जन्म दिया है। संगीत रत्नाकर के अनुसार, इस परंपरा के प्रथम आचार्य स्वयं भगवान शिव माने जाते हैं, जिन्होंने तांडव के माध्यम से नाद अर्थात् आदि ध्वनि की उत्पत्ति की।इसके पश्चात ब्रह्मा, भरतमुनि तथा शार्ङ्गदेव जैसे अनेक आचार्यों ने इस विद्या को समृद्ध किया।

नाद : संगीत का मूलतत्त्व

भारतीय संगीत की आधारशिला नाद है। नाद का शाब्दिक अर्थ ध्वनि है, किन्तु इसका तात्त्विक अर्थ उससे कहीं अधिक व्यापक है। यह केवल श्रव्य ध्वनि न होकर सृष्टि का मूल कंपन (Cosmic Vibration) है– वही तत्त्व जिससे समस्त ब्रह्माण्ड का आविर्भाव माना गया है।

नादबिन्दुपनिषद् में कहा गया है–

"नादरूपं परं ब्रह्म तत्त्वमेकं निरामयम्।
नादबिन्दुं समालम्ब्य योगी मोक्षं निगच्छति।।"

(नादबिन्दुपनिषद्, श्लोक 6)

("नाद ही परम ब्रह्म का स्वरूप है। योगी नादबिन्दु का आलम्बन कर मोक्ष प्राप्त करता है।") यह सूचित करता है कि नाद न केवल संगीत का मूल है, बल्कि स्वयं ब्रह्म का प्रतीक है - जो सृष्टि, स्थिति और प्रलय का हेतु है।

नाद के तत्त्व

संगीतरत्नाकर (1.3.6-7) में नाद के प्रकटन का कारण इस प्रकार वर्णित है:

"नकारं प्राणनामानं दकारमनलं विदुः।
जातः प्राणाग्निसंयोगात्तेन नादोऽभिधीयते।।"

अर्थात् नाद के दो मुख्य तत्त्व हैं –

1. नकार - प्राण तत्त्व का सूचक/ 'न' (प्राणतत्त्व का सूचक)
2. दकार - अग्नि तत्त्व का सूचक/ 'द' (अग्नितत्त्व का प्रतीक)

प्राण (जीवनशक्ति) तथा अग्नि (ऊर्जा) के संयोग से नाद की उत्पत्ति होती है। यही नाद जीवन के समस्त स्वरूपों का कारण है।

नाद के भेद

शास्त्रीय ग्रंथों में नाद के दो भेद स्वीकार किए गए हैं–

1. आहत नाद

यह वह ध्वनि है, जो बाहरी उपकरणों या क्रियाओं (वाद्य, कंठ) के माध्यम से उत्पन्न होती है। (बाह्य साधनों (कंठ, वाद्य आदि) द्वारा उत्पन्न ध्वनि।)

2. अनाहत नाद

- यह आंतरिक, सूक्ष्म और दिव्य ध्वनि है।
- इसे केवल ऋषि-मुनि और ज्ञानी उपासना के माध्यम से अनुभव कर सकते हैं।
- इसे मुक्तिदायक माना गया है, क्योंकि यह आध्यात्मिक चेतना का माध्यम है।आंतरिक, सूक्ष्म, दिव्य ध्वनि, जिसे योगी ध्यानावस्था में हृदयदेश में अनुभव करते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

योगशिखोपनिषद् में अनाहत नाद की महत्ता बताते हुए कहा गया है-

"हृदि नादं सदा ध्यानं तन्मध्ये लीनमानसः।
नादेन विन्यस्तचित्तः परं ब्रह्माधिगच्छति।।"

(योगशिखोपनिषद्, 1.75)

("जो साधक हृदयस्थ नाद का निरंतर ध्यान करता है, वह ब्रह्म की परम स्थिति को प्राप्त होता है।")

श्रुति और स्वर

नाद का सूक्ष्मतम रूप श्रुति है। इसे सामान्यतः कंठ से उत्पन्न नहीं किया जा सकता, किंतु वीणा, वाद्य तथा विशेष साधना द्वारा इसका अनुभव संभव है। इन्हीं श्रुतियों का क्रमबद्ध संयोजन सात शुद्ध स्वरों (षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद) में किया गया है। सामवेद में भी स्वर की महिमा का उल्लेख है–

"उत्तिष्ठ स्वरः पृथिव्या दिवं गच्छतु मध्यमः।
अत्युच्छः पर्जन्यरूपः स्वरस्य देवताः स्मृताः।।"

(सामवेद संहिता)

("स्वर का प्रत्येक स्तर पृथ्वी, आकाश और वर्षा से जुड़ा है, ये देवतुल्य हैं।")

गीत और वाद्य की अन्तर्निष्ठता

भारतीय संगीत में गीत (स्वर) और वाद्य (वादन) की गहन अन्तरंगता है। वाद्य संगीत गीत को केवल संवारता नहीं, बल्कि उसके अर्थ, भाव और रस को भी परिपूर्ण करता है। दोनों के सामंजस्य से श्रोता को आत्मिक तृप्ति का अनुभव होता है।

नाद योग : संगीत का आध्यात्मिक स्वरूप

भारतीय परंपरा में संगीत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि साधना और योग का साधन भी है। नाद को 'नादयोग' की संज्ञा दी गई है, जिसका उद्देश्य आत्मा को ब्रह्म की ओर उन्मुख करना है। नादबिन्दूपनिषद् में कहा गया है:

"अनाहतशब्दं हृदये च ध्यायन्
ब्रह्मरूपं तत्त्वमवेति बुद्ध्या।"

(नादबिन्दूपनिषद्, श्लोक 24)

("जो साधक हृदय में स्थित अनाहत नाद का ध्यान करता है, वह बुद्धि द्वारा ब्रह्मरूप तत्त्व को प्राप्त करता है।")

नाद, श्रुति और स्वर का यह गूढ़ तत्त्व न केवल भारतीय संगीतशास्त्र का आधार है, बल्कि सम्पूर्ण भारतीय दार्शनिक एवं आध्यात्मिक चिंतन का केन्द्र भी है। संगीत यहाँ केवल कला नहीं, अपितु योग, उपासना और ब्रह्मानुभूति का माध्यम है - जो श्रोता और साधक दोनों को आत्मा की गहराइयों तक ले जाने में सक्षम है।

नाद का संगीत से विशेष संबंध

संगीत की नींव नाद पर आधारित है। ऐसी ध्वनि, जो नियमित, संगीतोपयोगी, और मन को रंजक लगे, उसे *आहत नाद* कहा गया है। संगीत शास्त्र के अनुसार, संपूर्ण संगीत नाद के अधीन है।

नाद का महत्व

संगीतरत्नाकर में नाद और उसके प्रभाव को इस प्रकार व्यक्त किया गया है:

"नादेन व्यज्यते वर्णः पदं वर्णात् पदाद्वचः।
वचसो व्यवहारोऽयं नादाधीनमतो जगत्।।" (सं.र. 1/2/2)

इसका तात्पर्य यह है कि–

- नाद से वर्ण (अक्षर) उत्पन्न होते हैं।
- वर्ण से पद (शब्द) बनते हैं।
- पद से वचन (वाक्य-वाणी) बनती है।
- वाणी के माध्यम से व्यवहार संभव होता है।

इसलिए कहा गया है कि पूरा संसार नाद के अधीन है।

आहत नाद और संगीत

आहत नाद, जो वाणीस्वरूप होता है, संगीत का मुख्य आधार है। यह नाद वह ध्वनि है, जिसे सुनकर मन को आनंद मिले और जो संगीत में उपयोगी हो।

Scanned with OKEN Scanner

श्रुति - संगीत की आधारशिला

श्रुति का अर्थ

श्रुति शब्द *श्रु* धातु से बना है, जिसका अर्थ है "सुनना"। सामान्यतः इसे वह ध्वनि माना जाता है, जिसे कानों से सुना जा सके। लेकिन सांगीतिक दृष्टि से श्रुति का अर्थ है वह ध्वनि, जो स्पष्ट रूप से पहचानी जा सके और संगीत में उपयोगी हो।

संगीत में श्रुति की परिभाषा

अभिनव राजमंजरी में श्रुति को इस प्रकार परिभाषित किया गया है–

"नित्यं गीतोपयोगित्वमभिज्ञेयत्वमप्युत।
लक्षे प्रोक्तं सुपर्याप्तं संगीत-श्रुतिलक्षणम्।।"

इसका अभिप्राय है–

- ऐसी ध्वनि, जो गीत में उपयोगी हो।
- स्पष्ट रूप से अलग-अलग पहचानी जा सके।

संगीत के ग्रंथों में मुख्यतः 22 श्रुतियों का उल्लेख मिलता है, जो संगीत का आधार हैं।

स्वर - श्रुति का विकसित रूप

♪ स्वर की परिभाषा

संगीत पारिजात में स्वर को इस प्रकार समझाया गया है:

"स्वर-रजयन्ति स्वतः स्वांत श्रोतृणामिति ते स्वराः।"

इसका तात्पर्य है–

- स्वर वह ध्वनि है, जो स्वतः ही सुनने वालों के चित्त को आनंदित (रंजन) करती है।
- यह श्रुति से विकसित होती है और संगीत के लिए अनिवार्य होती है।

♪ श्रुति और स्वर का संबंध

- श्रुति सूक्ष्म ध्वनि है, जो स्वर के रूप में प्रकट होती है।
- स्वर सुनने वालों को रंजक और आनंददायक अनुभव प्रदान करते हैं।

नाद, श्रुति, और स्वर का परस्पर संबंध संगीत की आधारशिला है।

1. नाद सबसे मूलभूत तत्त्व है, जिससे संगीत की ध्वनि उत्पन्न होती है।
2. श्रुति, नाद का व्यवस्थित और स्पष्ट रूप है, जो संगीत में उपयोगी होती है।
3. स्वर, श्रुति का विकसित और सुनने में आनंददायक रूप है।

भारतीय संगीत का यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसकी परंपरा, गहराई और सौंदर्य को दर्शाता है, जिससे यह केवल एक कला नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक धरोहर भी है।

स्वर और उनकी विशेषता

♪ स्वर का अर्थ और प्रकार

संगीत पारिजात में स्वर को इस प्रकार परिभाषित किया गया है:

"स्वर-रजयन्ति स्वतः स्वांत श्रोतृणामिति ते स्वराः।"

इसका तात्पर्य है कि–

- स्वर वे ध्वनियाँ हैं, जो सुनने वालों के चित्त को स्वाभाविक रूप से रंजित (आनंदित) करती हैं।
- संगीत में सात मुख्य स्वरों को मान्यता दी गई है:
  - **षड़ज (सा), ऋषभ (रे), गांधार (ग), मध्यम (म), पंचम (प), धैवत (ध), और निषाद (नि)।**

♪ स्वरों के भेद

1. **शुद्ध स्वर**: मूल स्वर जो अपने प्राकृतिक रूप में प्रयोग होते हैं।
2. **विकृत स्वर**: स्वर जो कोमल (मृदु) या तीव्र (प्रखर) रूप में गाए जाते हैं।
3. **चल और अचल स्वर:**
   - **अचल स्वर**: षड़ज (सा) और पंचम (प), जिनमें बदलाव संभव नहीं।
   - **चल स्वर**: शेष पाँच स्वर (रे, ग, म, ध, नि), जो कोमल या तीव्र हो सकते हैं।

♪ आधुनिक स्वर व्यवस्था

आज के संगीत में बारह स्वरों का प्रयोग किया जाता है:

Scanned with OKEN Scanner

- सात शुद्ध स्वर।
- पाँच विकृत स्वर (कोमल और तीव्र)।

स्वर से ग्राम और मूर्च्छना

♪ ग्राम और मूर्च्छना का स्वरूप

- **ग्राम**: स्वरों के समूह को ग्राम कहा जाता है।
  - दो प्रकार: षड्ज-ग्राम और मध्यम-ग्राम।
- **मूर्च्छना**: सात स्वरों का क्रमिक आरोहण और अवरोहण मूर्च्छना कहलाता है।
  - षड्ज और मध्यम ग्राम से सात-सात मूर्च्छनाएँ बनती हैं।
  - कुल मूर्च्छनाएँ: 56 (षड्ज और मध्यम ग्राम से)।

♪ षाडव और औडव मूर्च्छना

- **षाडव**: मूर्च्छना जिसमें एक स्वर कम हो।
- **औडव**: मूर्च्छना जिसमें दो स्वर कम हो।

इन स्वर संयोजनों को ही *तान* कहा जाता है।

राग और उसका स्वरूप

♪ राग की परिभाषा

मतंगमुनि कृत *वृहत् देशी* में राग को इस प्रकार परिभाषित किया गया है:

"योऽसौ ध्वनिशेषस्तु स्वरवर्ण विभूषितः।
रंजको जनचित्तानाम् स रागः कथितो उदाहृतः।।"

इसका अर्थ है:

- वह विशेष ध्वनि, जो स्वर और वाणी से सुसज्जित हो।
- जो चित्त को आनंदित (रंजित) करे, वह राग कहलाता है।

♪ रागों का वर्गीकरण

शास्त्रीय संगीत में रागों का वर्गीकरण विभिन्न रूपों में किया गया है:

1. **शुद्ध राग**

2. **छायालम राग**
3. **संकीर्ण राग**
4. **राग-रागिनी पद्धति**
5. **दशविध राग वर्गीकरण**
6. **थाट-राग पद्धति** (आधुनिक उत्तर भारतीय संगीत में प्रचलित)।

(**वसंत रागिनी** वसंत ऋतु का राग है।
इस चित्र में श्रीकृष्ण को गोपियों के साथ नृत्य करते हुए दर्शाया गया है।)

थाट और वर्ण

♪ थाट की परिभाषा

- थाट वह स्वर समूह है, जिसमें राग उत्पन्न करने की क्षमता होती है।

Scanned with OKEN Scanner

- **पंडित भातखंडे** के अनुसार–
  - सात स्वरों से युक्त थाट: सम्पूर्ण।
  - छह स्वरों से युक्त थाट: षाडव।
  - पाँच स्वरों से युक्त थाट: औडव।

♪ वर्ण और उनके प्रकार

अभिनव रागमंजरी में वर्ण को इस प्रकार समझाया गया है:

"गानक्रियोच्यते वर्णः स चतुर्धा निरूपितः।
स्थाय्यारोही ह्यवरोही च संचारीत्यथ लक्षणम्।।"

वर्ण चार प्रकार के होते हैं:

1. **स्थायी वर्ण**: एक स्वर को बार-बार स्थिर होकर गाना।
2. **आरोही वर्ण**: स्वरों को क्रम से नीचे से ऊपर की ओर गाना।
3. **अवरोही वर्ण**: स्वरों को ऊपर से नीचे की ओर गाना।
4. **संचारी वर्ण**: आरोह और अवरोह के बीच स्वरों का स्वतंत्र गति से गान।

भारतीय संगीत का आधार स्वर, ग्राम, मूर्च्छना और रागों का सामंजस्य है।

स्वर से ग्राम, ग्राम से मूर्च्छना, और मूर्च्छना से राग उत्पन्न होते हैं।

इन शास्त्रीय अवधारणाओं ने भारतीय संगीत को वैज्ञानिक और आध्यात्मिक आधार प्रदान किया है, जिससे यह एक समृद्ध परंपरा बनती है।

संगीत में वर्ण और अलंकार

♪ वर्ण के प्रकार

- **स्थाई वर्ण**
  - जब एक ही स्वर को बार-बार ठहर कर गाया जाए, तो उसे स्थाई वर्ण कहते हैं।
- **आरोही वर्ण**
  - स्वरों को नीचे से ऊपर की दिशा में क्रमबद्ध रूप से गाने को आरोही वर्ण कहते हैं।

- **अवरोही वर्ण**
  - स्वरों को ऊपर से नीचे की दिशा में क्रमबद्ध रूप से गाने को अवरोही वर्ण कहते हैं।
- **संचारी वर्ण**
  - स्थाई, आरोही और अवरोही स्वरों का संयोग करके गाए जाने वाले वर्ण को संचारी वर्ण कहते हैं।

♪ अलंकार का महत्व

- **अलंकार** का शाब्दिक अर्थ है "आभूषण"।
- संगीत में वर्णों के विशिष्ट प्रयोग को अलंकार कहते हैं।
- अलंकार का उद्देश्य गायन और वादन को सुंदर और प्रभावशाली बनाना है।
- *अभिनव रागमंजरी* में इसे इस प्रकार समझाया गया है:

"शाशिना रहितेव निशा विजलेव नदी लता विपुष्पेव।
अविभूषितेव कांता गीतिरलंकारहीना स्यात्।।"

चंद्रमा के बिना रात, जल के बिना नदी, और आभूषण के बिना स्त्री की तरह, अलंकार के बिना संगीत भी शोभा नहीं देता।

राग का स्वरूप और उसके तत्व

♪ राग की जातियाँ

रागों को उनके स्वरों की संख्या के आधार पर तीन भागों में बाँटा गया है:

- **औडव राग**
  - पाँच स्वरों वाले राग।
- **षाडव राग**
  - छह स्वरों वाले राग।
- **संपूर्ण राग**
  - सात स्वरों वाले राग।
  - पाँच से कम या सात से अधिक स्वरों का राग संभव नहीं है।

Scanned with OKEN Scanner

राग के स्वर

- **वादी स्वर**
  - राग का सबसे प्रमुख स्वर। इसे राजा की उपाधि दी गई है।
- **संवादी स्वर**
  - वादी स्वर का सहायक स्वर। इसे मंत्री कहा गया है।
- **अनुवादी स्वर**
  - वादी और संवादी के अतिरिक्त अन्य स्वर।
- **विवादी स्वर**
  - ऐसे स्वर जो राग में कम प्रयुक्त होते हैं। कुशल संगीतज्ञ इन्हें प्रयोग कर राग की विविधता बढ़ाते हैं। इसे शत्रु स्वर भी कहा गया है।

राग के दस लक्षण

शास्त्रों में राग को पहचानने के लिए दस लक्षण बताए गए हैं–

1. **ग्रह**: वह स्वर जिससे राग शुरू होता है।
2. **अंश**: प्रमुख स्वर।
3. **मंद्र**: नीचे के स्वर।
4. **तार**: उच्च स्वर।
5. **न्यास**: वह स्वर जहाँ गाना समाप्त होता है।
6. **उपन्यास**: स्वरों का क्रमिक संयोग।
7. **अल्पत्व**: कुछ स्वरों का कम प्रयोग।
8. **बहुत्व**: कुछ स्वरों का अधिक प्रयोग।
9. **षाडव**: छह स्वरों का प्रयोग।
10. **औडव**: पाँच स्वरों का प्रयोग।

राग के विशेष तत्व

कण स्वर

- इसे स्पर्श स्वर भी कहते हैं।

- यह मूल स्वर के साथ किसी अन्य स्वर का सूक्ष्म संपर्क होता है।
- इसका प्रयोग राग की रंजकता और माधुर्य बढ़ाने के लिए किया जाता है।

राग और ऋतु

रागों का समय विभाजन

- उत्तर भारतीय संगीत में रागों को गाने-बजाने का समय दो भागों में बाँटा गया है:

Scanned with OKEN Scanner

- **दिन का भाग**: 12 बजे दिन से 12 बजे रात।
- **रात का भाग**: 12 बजे रात से 12 बजे दिन।

इसे *पूर्वांगवादी* और *उत्तरांगवादी* राग भी कहते हैं।

आलाप गायन

राग के स्वरों को उनके वादी, संवादी और अन्य विशेष स्वरों के साथ नियमों के अनुसा गाना *आलाप* कहलाता है।

- आलाप के चार प्रकार–
  - **आकार आलाप**: "आ" ध्वनि का प्रयोग।
  - **नोम तोम आलाप**: "नोम" और "तोम" का प्रयोग।
  - **स्वराक्षर आलाप**: स्वरों का उच्चारण।
  - **बोल आलाप**: गीत के शब्दों का प्रयोग।

गमक

- **गमक** का अर्थ है स्वर में हल्के कंपन द्वारा सुनने वाले के मन को प्रसन्न करना
- यह राग की भावनाओं को गहराई से व्यक्त करने का एक माध्यम है।

वर्ण, अलंकार, और रागों के तत्व भारतीय संगीत की जटिलता और सुंदरता क परिभाषित करते हैं।

रागों के लक्षण, स्वर का प्रयोग, और आलंकारिक सज्जा संगीत की अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाते हैं।

भारतीय संगीत में यह तत्व एक वैज्ञानिक और कलात्मक दृष्टिकोण प्रदान कर हैं, जो इसे विश्व में अद्वितीय बनाता है।

संगीत के तत्वों और परंपराओं का विश्लेषण

गमक

- गमक का अर्थ है स्वरों का विशिष्ट प्रकार के कंपन के साथ प्रयोग, जो श्रोताअ के मन को सुख प्रदान करता है।
- प्राचीन संगीत शास्त्रों में गमक के पंद्रह **प्रकार** बताए गए हैं।
- **उत्तर भारतीय संगीत** में ध्रुपद गायकी गमक का प्रचुर प्रयोग करती है।

- **दक्षिण भारतीय संगीत (कर्नाटक संगीत)** में गमक का विशेष महत्त्व है, जहाँ इसे कई विविध तरीकों से प्रयोग किया जाता है।

तान

- राग के स्वरूप को **द्रुत लय** (तेज गति) में विस्तार करने की प्रक्रिया को तान कहते हैं।
- अलंकारों की सहायता से तानों की रचना होती है।
- तानों के विभिन्न प्रकार:
  - **सपाट तान**
  - **कूटतान**
  - **बोलतान**
  - **गमक की तान**
  - **फिरत की तान**
  - **छूट की तान**
- तानों के माध्यम से गायक या वादक राग के नियमों का पालन करते हुए राग को सजाता है और वैचित्र्य उत्पन्न करता है।

ताल, मात्रा और लय

ताल का अर्थ और महत्त्व

संगीत रत्नाकर के अनुसार–

"ताल स्तल-प्रतिष्ठायामिति धातोर्धञ्जि स्मृतः।
गीतं वाद्यं तथा नृत्यं यतस्ताले प्रतिष्ठितम्।।"

- ताल गीत, वाद्य और नृत्य को एक आधार और स्थिरता प्रदान करता है।
- ताल की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है।

ताल और मात्रा

- ताल की **लंबाई स्पष्ट करने वाली इकाई** को **मात्रा** कहते हैं।
- ताल की रचना मात्राओं के योग से होती है।

लय और ताल का संबंध

- ताल का संबंध **लय** से होता है।

Scanned with OKEN Scanner

- लय संगीत का आधार है, जिसमें क्रिया और विश्रांति के बीच का सम सम्मिलित होता है।

लय के प्रकार–

- **विलंबित लय** (धीमी गति)
- **मध्य लय** (मध्यम गति)
- **द्रुत लय** (तेज गति)

♪ गुरु-शिष्य परंपरा और संगीत की संरचना

- भारतीय संगीत को सही ढंग से समझने और प्रस्तुत करने के लिए **गुरु-शिष्य परंपरा** का महत्त्व अत्यधिक है।
- यह परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है और संगीत के व्यापक और नियमबद्ध स्वरूप को संरक्षित करती है।

♪ प्राचीन संगीत की विधाएँ

- प्राचीन संगीत में कपालगान, कंबलगान, जातिगान, प्रबंधगान, गीतक, औ ध्रुवागान जैसी विधाएँ प्रचलित थीं, जो अब विलुप्तप्राय हैं।
- इसका मुख्य कारण **दीर्घकालीन परतंत्रता** और परंपरा का टूट जाना है।

मार्ग संगीत और देशी संगीत

♪ मार्ग संगीत

- यह प्राचीन समय का शास्त्रीय संगीत है, जो आज लगभग विलुप्त हो चुका है।
- कुछ वैष्णव मंदिरों में इसे पारंपरिक रूप से गाया जाता है, लेकिन इसके मू नियमों का ज्ञान लुप्त हो गया है।

♪ देशी संगीत

- वर्तमान में ध्रुपद, मालकोश, भैरवी, ख्याल, ठुमरी, यमन आदि विधाएँ देश संगीत के रूप में प्रचलित हैं।
- गायक मूल शास्त्रीय सिद्धांतों के अभाव में केवल गुरु से प्राप्त ज्ञान तक ही सीमि रहते हैं।

उत्तर भारत और दक्षिण भारत का संगीत

- **उत्तर भारत**: शास्त्रीय संगीत में कुछ कमी आई है, और गुरु-शिष्य परंपरा में सीमित ज्ञान का प्रसार हो रहा है।
- **दक्षिण भारत**: कर्नाटक संगीत में प्राचीन संगीत अधिक संरक्षित है।

हालाँकि, वहाँ भी शास्त्रीय ग्रंथों का अध्ययन उस स्तर पर नहीं हो रहा है, जैसा संरक्षण और संवर्धन के लिए आवश्यक है। भारतीय संगीत का इतिहास, इसकी परंपराएँ, और शास्त्रीय स्वरूप अत्यंत समृद्ध हैं। गमक, तान, ताल, और लय जैसे तत्व संगीत को वैज्ञानिक और कलात्मक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। हालाँकि, वर्तमान में शास्त्रीय संगीत के गहरे अध्ययन और संरक्षण की आवश्यकता है, ताकि इसकी परंपरा आने वाली पीढ़ियों तक संपूर्णता में पहुँच सके।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रमुख शैलियाँ

भारतीय शास्त्रीय संगीत मुख्य रूप से दो प्रमुख शैलियों में बाँटा जाता है:

♪ **हिन्दुस्तानी संगीत:** यह संगीत शैली उत्तर भारत, पाकिस्तान, और बांग्लादेश में प्रचलित है। प्रमुख राग: भैरव, भैरवी, आशावरी, अहीरभैरव, यमन, कल्याण, मल्हार, पाहड़ी, वृन्दावनी सारंग, वसन्त, ललित, धनश्री, केदार, गुर्जरी, तोड़ी, कानडा, दरबारी कानडा, शिवरंजिनी, मियाँ की मल्हार, राग दीपक, नटविहाग, वागेश्री, भीमपलाशी, हिंडोल, आदि।

इन रागों का संगीत में उपयोग विभिन्न भावनाओं, मौसमों और समय के अनुसार किया जाता है।

♪ **कर्नाटक संगीत:** यह दक्षिण भारत की प्रमुख शास्त्रीय संगीत शैली है, जिसमें रागों और तानों का एक अलग शैली में उपयोग किया जाता है। कर्नाटक संगीत में विशेष रूप से **कृति**, **काव्यात्मकता** और **भक्ति संगीत** की प्रधानता है।

शास्त्रीय सिद्धान्तों को आत्मसात करने के लिए संस्कृत का महत्त्व

- शास्त्रीय संगीत के सिद्धान्तों को समझने के लिए **संस्कृत** का ज्ञान अत्यधिक आवश्यक है, क्योंकि अधिकांश शास्त्रीय संगीत ग्रंथ संस्कृत में लिखे गए हैं।
- **नाट्य**, **काव्य** और **दर्शन** के ज्ञान के बिना शास्त्रीय संगीत के गहरे सिद्धान्तों को समझना मुश्किल हो सकता है।

Scanned with OKEN Scanner

- यह सिद्धान्त भारतीय संगीत की गहरी परंपरा से जुड़े हैं, और इनका सही ज्ञान संगीतज्ञ के लिए अनिवार्य है।

वाद्य का महत्त्व

- भारतीय संगीत के सिद्धान्त के अनुसार, **वाद्य** को संगीत का अभिन्न अंग माना जाता है।
- **संगीतरत्नाकर** में यह कहा गया है–

  "गीतं वाद्यं तथा नृत्तं त्रयं सङ्गीतमुच्यते"

  - इसका अर्थ है कि संगीत में **गीत**, **वाद्य**, और **नृत्य** तीनों का समावेश होता है।
- वाद्यों को **अनादि** (अनंत) माना गया है, क्योंकि वैदिक साहित्य में वाद्यों का उल्लेख बहुत पुराना और शाश्वत बताया गया है।
- **भगवान शंकर** (डमरूधारी) और **भगवती सरस्वती** (वीणाधारिणी) जैसे देवता वाद्य वादन से जुड़े हुए हैं, जो दर्शाते हैं कि वाद्य का महत्व भारतीय परंपरा में बहुत अधिक है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत एक विशाल और गहन परंपरा है, जिसमें राग, तान, ताल, और वाद्य का अनूठा मेल है। इसे समझने और सही तरीके से प्रस्तुत करने के लिए शास्त्रीय सिद्धान्तों का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है, जो संस्कृत, नाट्य, काव्य और दर्शन के अध्ययन के माध्यम से ही संभव है। वाद्य, गीत, और नृत्य को मिलाकर संगीत की एक संपूर्णता बनती है, जो भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

भारतीय वाद्यों का वैभव और प्रकार

भारतीय शास्त्रीय संगीत में वाद्य का अत्यधिक महत्व है। आचार्य भरत ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ **नाट्यशास्त्र** में वाद्यों के प्रकार और उनके प्रयोग का विस्तार से उल्लेख किया। उन्होंने वाद्य के लिए **'आतोद्य'** शब्द का प्रयोग किया, जो संगीत के नाद उत्पन्न करने वाले उपकरणों के लिए है। इसके अलावा, आचार्य भरत के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए, बाद के आचार्य और संगीतज्ञों ने वाद्य शास्त्र में और भी विस्तार किया।

आचार्य भरत ने संगीत के मूल तत्व **नाद** (ध्वनि) की उत्पत्ति को पदार्थों के संयोग और वियोग से जोड़ा। इसका मतलब है कि वाद्यों की ध्वनि भी उन पदार्थों के मिलने और अलग होने से उत्पन्न होती है। इसी कारण वाद्यों का नाद **संयोगज** (जो दो या दो से अधिक पदार्थों के मिलने से उत्पन्न होता है) और **वियोगज** (जो पदार्थों के अलग होने से उत्पन्न होता है) होता है।

वाद्यों के चार प्रमुख प्रकार

आचार्य भरत ने वाद्यों को चार प्रमुख श्रेणियों में बाँटा है। ये श्रेणियाँ वाद्यों के निर्माण और उनकी ध्वनि उत्पन्न करने की प्रक्रिया पर आधारित हैं। आइए, इन चार प्रकार के वाद्यों को समझते हैं:

1. **ततः** ये वाद्य तंत्रियों (तारों) द्वारा बनाए जाते हैं और इनकी ध्वनि तारों के कंपन से उत्पन्न होती है। उदाहरण के तौर पर, **वीणा**, **सितार**, और **गिटार** जैसे वाद्य इसी श्रेणी में आते हैं।
2. **अवनद्धः** यह वह वाद्य होते हैं जिनमें एक प्रकार की त्वचा या झिल्ली होती है, जिसे दबाने या खींचने से ध्वनि निकलती है।**तबला**, **पखावज**, **ढोलक** आदि इसी श्रेणी में आते हैं। इन वाद्यों की ध्वनि मुख्यतः हवा के प्रवाह के बजाय, त्वचा की कंपन से उत्पन्न होती है।
3. **घनः** इन वाद्यों से ताल उत्पन्न होती है और ये आमतौर पर धातु, पत्थर या लकड़ी से बने होते हैं। **घण्टा**, **मृदंग**, और **सिंहासन** जैसे वाद्य इस श्रेणी में आते हैं। इन वाद्यों की ध्वनि भी ताल के साथ तालमेल में होती है और वे संगीत में लयात्मकता का योगदान करते हैं।
4. **सुषिरः** ये वाद्य हवा द्वारा ध्वनि उत्पन्न करते हैं और आमतौर पर बांस, लकड़ी या अन्य हल्के पदार्थों से बने होते हैं।**बांसुरी**, **शंख**, और **सक्सोफोन** इस श्रेणी में आते हैं। इन वाद्यों में हवा का प्रवाह प्रमुख भूमिका निभाता है, जो संगीत में एक नरम और मधुर ध्वनि उत्पन्न करता है।

वाद्यों की उत्पत्ति और परिष्कृत रूप

आचार्य भरत ने इन चार प्रकार के वाद्यों के बारे में विस्तार से बताया था। उनका मानना था कि इन वाद्यों का निर्माण पदार्थों के मिलाने और अलग करने से होता है, जो संगीत की सुंदरता और विविधता को बढ़ाते हैं। समय के साथ, इन वाद्यों के रूप में परिवर्तन आया और न केवल पुराने वाद्यों का सुधार हुआ, बल्कि नए वाद्य भी बनाए गए।

Scanned with OKEN Scanner

आज भी, इन चार वाद्य प्रकारों को संगीतज्ञों द्वारा अपनाया जाता है, और इनका सामूहिक नाम **आतोद्य** और **तूर्य** भी महाभारत और पुराणों में मिलता है। इन वाद्यों का सामूहिक प्रयोग भारतीय संगीत के हर रूप में देखा जाता है, चाहे वह लोक संगीत हो या शास्त्रीय संगीत।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में वाद्य का अत्यधिक महत्व है। ये संगीत के निर्माण में मदद करते हैं और संगीत को जीवंत बनाते हैं। आचार्य भरत के सिद्धांतों से लेकर आज तक, इन वाद्यों की ध्वनि, संरचना और उपयोग में निरंतर परिवर्तन आया है, जिससे भारतीय संगीत की विविधता और गहराई बढ़ी है। इन वाद्यों का महत्व सिर्फ संगीत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि ये भारतीय संस्कृति और धार्मिक अनुष्ठानों का अभिन्न हिस्सा भी हैं।

नाट्य, नर्तन, नृत्य और नृत्त – एक ही विधा के विभिन्न रूप

भारतीय शास्त्रीय कला में **नाट्य**, **नर्तन**, **नृत्य** और **नृत्त** का महत्वपूर्ण स्थान है। आचार्य भरत ने **नाट्य** को एक समग्र कला के रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें **गीत**, **वाद्य**, और **नृत्य** सभी के अभिन्न अंश होते हैं। समय के साथ, जब ये सभी तत्व **संगीत** के अंतर्गत सम्मिलित होने लगे, तो संगीतकारों और आचार्यों ने इन्हें संगीत के एक रूप के रूप में स्वीकार किया।

♪ नाट्य और नर्तन का संबंध

अगर हम नाट्य की परिभाषा और इसके संदर्भ में विचार करें तो यह साफ़ होता है कि **नृत्य** और **नाट्य** एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। खासकर **नर्तन**, जो नाट्य के अभिन्न अंग के रूप में देखा जाता है। नर्तन का उद्देश्य सिर्फ शरीर के अंगों की क्रिया नहीं होता, बल्कि यह भावों और रसों की अभिव्यक्ति भी है। आचार्य शाङ्गदेव ने **संगीतरत्नाकर** के **नर्तनाध्याय** में नर्तन को एक विस्तृत और गहन रूप में समझाया है। उन्होंने नृत्य, नाट्य और नृत्त को एक ही तत्त्व के रूप में माना है और बताया कि ये तीनों ब्रह्मा जी द्वारा उपदेशित हैं।

♪ नर्तन का उद्देश्य

भारतीय शास्त्रीय नर्तन केवल शारीरिक गति नहीं है, बल्कि यह भावों और रसों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। इसमें **गति**, **करण**, **अंगहार**, **रेचक**, **चारि** और **स्थानक** जैसे अंगों की क्रियाओं द्वारा मनोहर भावों का निरूपण होता है।**वायु पुराण** में नर्तन के उद्देश्य को और भी स्पष्ट किया गया है। इसके अनुसार, नृत्य के द्वारा **धर्म**, **आर्थ** और **कीर्ति** जैसे

पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है और यह दुख, शोक आदि को दूर करता है। नृत्य का मुख्य उद्देश्य **रसानन्द** का अनुभव कराना है, जो ब्रह्मानन्द से भी श्रेष्ठ माना जाता है।

संगीत रत्नाकर में यह उल्लेख मिलता है कि **नर्तनानन्द** ब्रह्मानन्द से अधिक श्रेष्ठ है, क्योंकि यही आनंद नारद और अन्य ब्रह्मज्ञानी भी प्राप्त करते हैं।

नटराज - यह मूर्ति शिव को नृत्य और नाट्य कला के भगवान के रूप में दर्शाती है। इसकी शैली और अनुपात हिंदू कला ग्रंथों के अनुसार बनाए गए हैं।

शिव को नटराज, नृत्य के भगवान के रूप में दर्शाया गया है (लगभग 950-1000 ई.), चोल कांस्य मूर्ति, तमिलनाडु, 10वीं या 11वीं शताब्दी। नटराज का एक चित्रण 1820 का है, जिसमें उन्हें मंदिर रथ में दर्शाया गया है।

नृत्य और नृत्त का भेद

अब बात करते हैं **नृत्य** और **नृत्त** के भेद की, जो **दशरूपक** ग्रंथ के आधार पर स्पष्ट किया गया है। आचार्य धनंजय ने कहा:

अन्यद् भावाश्रयं नृत्यं नृत्तं ताललयाश्रयम्। - (द.रू.-1/6)

अर्थात् जो **अङ्ग-संचालन और अभिनयों** द्वारा **भावों** को अभिव्यक्त करता है, वह **नृत्य** कहलाता है, जबकि जो **ताल** और **लय** पर आधारित सिर्फ **अंग संचालन** हो, वह **नृत्त** कहलाता है।

शाङ्गदेव ने **संगीतरत्नाकर** में इस भेद को और स्पष्ट किया है–

"आङ्गिकाभिनयैरेव भावानेव व्यनक्ति यत्।
तन्नृत्यं मार्गशब्देन प्रसिद्धं नृत्यवेदिनाम्॥" (सं.र.-7/6)

अर्थात्, जो **आङ्गिक अभिनयों** द्वारा भावों को व्यक्त करता है, उसे **नृत्य** कहते हैं। नृत्य का उद्देश्य भावों और रसों की गहरी अभिव्यक्ति होती है।

इस प्रकार, नाट्य, नर्तन, नृत्य और नृत्त सभी एक ही कला रूप के विभिन्न पहलू हैं। ये विभिन्न रूप **भावों**, **रसों** और **लय** के माध्यम से दर्शकों को गहरे अनुभव प्रदान करते हैं। नृत्य और नर्तन, चाहे वे अलग-अलग नामों से जाने जाते हों, लेकिन वे भारतीय कला और संस्कृति के अभिन्न अंग हैं, जो जीवन और ब्रह्म के परम आनंद को दर्शाने का कार्य करते हैं।

ताण्डव और लास्य का अनुशासित स्वरूप और लोकनृत्य

ताण्डव और **लास्य** भारतीय नृत्य परंपरा के दो महत्वपूर्ण रूप हैं, जिनकी उत्पत्ति भगवान शिव और पार्वती से जुड़ी हुई मानी जाती है। इन दोनों नृत्य रूपों ने बाद में शास्त्रीय नृत्य के अनुशासन में एक विशेष स्थान पाया। ताण्डव एक तेज, उग्र और विकट नृत्य है, जिसे भगवान शिव द्वारा नृत्य के रूप में प्रस्तुत किया गया था, जबकि लास्य एक कोमल, सौम्य और सुंदर नृत्य है, जिसे देवी पार्वती ने प्रस्तुत किया।

सारणी: सप्तताण्डव के प्रकार

क्र.	ताण्डव का प्रकार	विवरण	प्रतीकात्मक अर्थ	संदर्भ / स्रोत
1.	आनंद ताण्डव	शिव द्वारा परमानंद की स्थिति में किया गया नृत्य।	सृजन, संतुलन और ब्रह्म चेतना की लय का प्रतीक।	आनंद ताण्डव स्तोत्र, तैत्तिरीय संहिता, चिदम्बरम् परंपरा।
2.	संध्या ताण्डव	शिव द्वारा दिन-रात्रि की संधि बेला में किया गया नृत्य।	कालचक्र के परिवर्तन का प्रतीक।	आगम और पुराणों में संकेत रूप में उल्लेख।
3.	त्रिपुर ताण्डव	त्रिपुरासुर के वध के उपरांत किया गया विजय ताण्डव।	अधर्म पर धर्म की विजय।	शिव पुराण, कूर्म पुराण, महाभारत (शांति पर्व)।
4.	काल ताण्डव	काल के महान स्वरूप को दर्शाता है; शिव को काल के स्वामी रूप में प्रस्तुत करता है।	समय की अनिवार्यता और परिवर्तनशीलता।	शिव पुराण, तंत्र ग्रंथों में दार्शनिक रूप में।
5.	संपत्ति ताण्डव	समृद्धि, सिद्धि और शिवकृपा का प्रतीक ताण्डव।	ऐश्वर्य, सफलता और शुभ फल की प्राप्ति।	शैव परंपरा की व्याख्याओं में।
6.	संहार ताण्डव	शिव के उग्र और विनाशकारी रूप का प्रदर्शन; सृष्टि के अंत का नृत्य।	सृजन के बाद का विनाश – प्रलय का प्रतीक।	शिव पुराण, ललिता सहस्रनाम, नाट्यशास्त्र में संकेत।
7.	उमा ताण्डव	शिव द्वारा पार्वती (उमा) के साथ किया गया ताण्डव।	शिव-शक्ति के सामंजस्य और प्रेम का प्रतीक।	कैवल्य उपनिषद, पुराण एवं शैव तांत्रिक परंपराएँ।

सारणी: लास्य के चार प्रकार

क्र.	लास्य का प्रकार	विवरण	रस / भाव	मुख्य अभिव्यक्ति / विशेषताएँ	संदर्भ / ग्रंथ
1.	श्रृंगार लास्य	प्रेम, सौंदर्य और आकर्षण की कोमलता को प्रदर्शित करता है।	श्रृंगार रस	नेत्रों, भौंहों और अंगों की कोमल चेष्टाएँ।	नाट्यशास्त्र, पार्वती द्वारा उत्पत्ति की परंपरा।
2.	हास्य लास्य	हास्य, विनोद और चंचलता को दर्शाता है।	हास्य रस	चेहरे की चपलता, चंचल गति, मनोरंजक हाव-भाव।	अभिनयदर्पण, नाट्यशास्त्र के हास्य रस अध्याय से व्युत्पन्न।
3.	करुण लास्य	दुःख, दया और करुण रस की गहनता को प्रदर्शित करता है।	करुण रस	मन्द गति, नम आँखें, करुण हाव-भाव।	नाट्यशास्त्र में करुण रस; भक्तिपरक नृत्य परंपराओं में।
4.	भक्ति लास्य	ईश्वर भक्ति और आत्मसमर्पण की भावना से युक्त कोमल नृत्य।	भक्ति रस	हाथ जोड़ना, मंद मुस्कान, दिव्य भाव की दृष्टि।	भक्ति आंदोलन, कुचिपुड़ी, सत्रिया, मणिपुरी आदि में प्रचलित।

Scanned with OKEN Scanner

आचार्य भरत ने अपने ग्रंथ **नाट्यशास्त्र** में नृत्य के विविध रूपों और उनके अनुशासन का विवरण दिया है, जिसमें **आंगिक अभिनय**, **अंग**, **उपांग** और **प्रत्यंग** के माध्यम से भावों और रसों की अभिव्यक्ति पर जोर दिया गया है। भरत के अनुसार, नृत्य के इन विभिन्न पहलुओं को शास्त्रीय रूप से अनुशासित किया गया, जो आज तक भारतीय शास्त्रीय नृत्य की विभिन्न शैलियों में संरक्षित हैं, जैसे **भरतनाट्यम**, **ओडिसी**, **कुचिपुडी**, **कथकली**, **कथक**, **मोहिनी अट्टम्**, **सत्तरिया**, और **मणिपुरी**।

संगीत नाटक अकादमी और संस्कृति मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त आठ शास्त्रीय नृत्य

लोकनृत्य और शास्त्रीय नृत्य

भारत में शास्त्रीय नृत्य की परंपरा के साथ-साथ **लोकनृत्य** की भी प्राचीन और समृद्ध परंपरा रही है। लोकनृत्य, जिसे आम तौर पर बिना लिखित शास्त्रों के अभ्यास किया जाता है, अपने सरल रूप में जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रदर्शित करता है। ये नृत्य प्रकार आमतौर पर गांवों और छोटे समुदायों में प्रचलित होते हैं और उनकी संस्कृति और परंपरा को जीवित रखते हैं।

भारत के जनजातीय और लोक नृत्य

भारत में लोकनृत्य अपनी सांस्कृतिक विविधता और परंपराओं का अद्भुत प्रदर्शन करते हैं। ये नृत्य न केवल मनोरंजन का माध्यम हैं बल्कि इनमें सामाजिक, धार्मिक औ सांस्कृतिक संदेश भी समाहित होते हैं। प्रत्येक लोकनृत्य का अपना विशेष क्षेत्रीय संदर्भ और शैली है।

भारत में लोकनृत्यों की एक लंबी सूची है, जिनमें से कुछ प्रसिद्ध नाम इस प्रका हैं–

क्र.	लोकनृत्य	संक्षिप्त विवरण
1	धोबी नृत्य	धोबी समुदाय द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य उनकी सांस्कृतिक और सामाजिक परंपराओं का प्रतिनिधित्व करता है।
2	अहीरों का नाच (फरुवाही)	अहीर समुदाय का यह नृत्य मुख्यतः खेती और कृषि के उत्सवों मे किया जाता है।
3	कहरुआ नृत्य	यह नृत्य ढोल और अन्य वाद्य यंत्रों के ताल पर किया जाता है औ कृषि आधारित उत्सवों का हिस्सा है।
4	गोड़उ नाच	ग्रामीण क्षेत्रों में यह नृत्य समूह में किया जाता है और यह समुदाय की एकता का प्रतीक है।
5	नटुआ नृत्य	इसे मुख्यतः बिहार और झारखंड के क्षेत्र में किया जाता है और इसमें साहसिक कलाओं का प्रदर्शन होता है।
6	कोलदहकी नाच	आदिवासी संस्कृति का हिस्सा, यह नृत्य पारंपरिक जीवनशैली और उनकी सांस्कृतिक मान्यताओं को दर्शाता है।
7	मुसहरी नाच	मुसहर समुदाय का यह नृत्य उनकी सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है।
8	ज्वालामुखी अगरही देवी नृत्य	यह धार्मिक नृत्य देवी की आराधना और भक्ति का प्रदर्शन करता है।
9	करमा नृत्य	यह आदिवासी समुदाय द्वारा खेती के सीजन में किया जाने वाला नृत्य है, जो प्रकृति के प्रति सम्मान दर्शाता है।
10	झूमर नाच	मुख्यतः झारखंड और पश्चिम बंगाल में लोकप्रिय, यह नृत्य वसंत ऋतु के उत्सवों में किया जाता है।
11	बीहू	असम का प्रसिद्ध नृत्य, यह फसल कटाई के समय उल्लासपूर्वक किया जाता है।
12	भांगड़ा	पंजाब का यह नृत्य कृषि और फसल कटाई के उत्सवों का प्रतीक है।
13	गरबा	गुजरात का यह नृत्य नवरात्रि उत्सव के दौरान किया जाता है औ इसमें धार्मिक भक्ति भाव होता है।
14	कजरी नाच	यह मुख्यतः उत्तर प्रदेश और बिहार में श्रावण मास में किया जाने वाला नृत्य है।
15	होली नृत्य	होली के त्योहार पर उत्तर भारत में किए जाने वाले इस नृत्य में रंग और उत्साह की झलक होती है।
16	बिदेसिया नृत्य	बिहार का यह नृत्य सामाजिक और सांस्कृतिक संदेशों को नाटकीय शैली में प्रस्तुत करता है।
17	घूमर नृत्य	राजस्थान (विशेष रूप से भील जनजाति द्वारा प्रारंभ, जिसे बाद में राजपूतों ने अपनाया)। यह नृत्य नारीत्व, आनंद, परंपरा और वैवाहिक सौभाग्य का उत्सव है।

भारतीय लोकनृत्य विविधता में एकता का प्रतीक हैं। ये नृत्य न केवल क्षेत्रीय बल्कि राष्ट्रीय संस्कृति की गहराईयों को समझने का माध्यम भी हैं। इनमें व्यक्त भावनाएँ, सामाजिक संदेश और सांस्कृतिक मूल्य वर्तमान और भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक हैं।

इन लोकनृत्यों में कोई लिखित शास्त्र नहीं होता, परंतु वे परंपरागत नियमों और मान्यताओं के अनुसार संचालित होते हैं। इन नृत्यों में सौंदर्य, भावनात्मक अभिव्यक्ति और जीवन की वास्तविकताओं को दर्शाने की अद्भुत क्षमता होती है।

नाट्यशास्त्र और विश्व रंगमंच पर उसकी परंपरा का प्रभाव

1. कुटियाट्टम: विश्व की प्राचीनतम जीवित रंगपरंपरा

भारतीय रंगमंच की दीर्घजीवी परंपराओं में *कुटियाट्टम* (कूटियाट्टम) का स्थान अद्वितीय है। केरल की यह शास्त्रीय रंगशैली संसार की सबसे पुरानी जीवित नाट्यपरंपराओं में मानी जाती है। इसका उद्भव एवं विकास मुख्यतः संस्कृत नाटकों के मंचन हेतु हुआ, जिसमें भरत मुनि द्वारा प्रणीत *नाट्यशास्त्र* के सिद्धांतों का प्रत्यक्ष प्रभाव देखा जाता है।

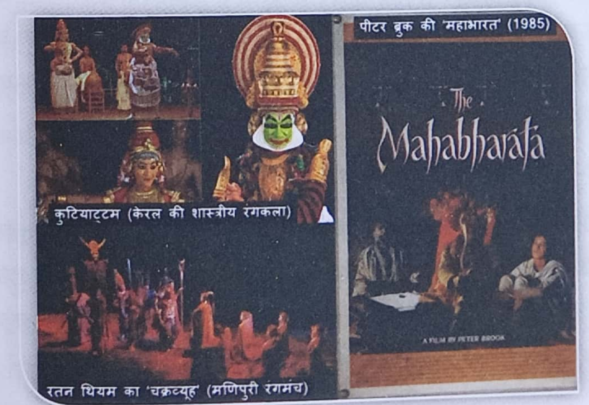

कुटियाट्टम (केरल की शास्त्रीय रंगकला)
रतन थियम का 'चक्रव्यूह' (मणिपुरी रंगमंच)
पीटर ब्रुक की 'महाभारत' (1985)

कुटियाट्टम की प्रस्तुति में *मुद्राओं* (हस्ताभिनय), *नेत्राभिनय* (आँखों द्वारा अभिनय) तथा *भावाभिनय* (आंतरिक भावनाओं की अभिव्यक्ति) को प्रधानता दी जाती है। इस परंपरा की विशेषता यह है कि इसमें एक ही नाट्यकृति का मंचन कई दिनों अथवा सप्ताहों तक चलता है, जिसमें प्रत्येक पात्र, भाव एवं घटना का गहन अन्वेषण किया जाता है।

2. भारतीय शास्त्रीय नृत्य एवं मुद्राभिनय पर नाट्यशास्त्र की छाया

भरत मुनि का *नाट्यशास्त्र* न केवल रंगमंच, बल्कि समस्त शास्त्रीय नृत्य परंपराओं- भरतनाट्यम, कथकली, कथक, मणिपुरी, ओडिसी तथा कुचिपुड़ी-के मूल में स्थित है। इन सभी शैलियों में *नवरस सिद्धांत*, *अंगिक* (शारीरिक), *वाचिक* (संवादी), *आहार्य* (परिधान) और *सात्विक* (आंतरिक) अभिनय की अवधारणाओं का प्रत्यक्ष पालन होता है।

विशेष रूप से नृत्य की लयात्मकता, तालबद्धता, भावाभिनय, रंगमंचीय सौंदर्यबोध एवं प्रतीकात्मक मुद्राएँ-सभी *नाट्यशास्त्र* की अनुपालना करते हैं। नर्तक या नर्तकी का प्रत्येक अंग, मुद्रा, दृष्टि तथा गति दर्शक में विशिष्ट *रस* उत्पन्न करने हेतु संयोजित होता है।

3. रामलीला तथा लोकनाट्य परंपराओं में नाट्यशास्त्र की छाप

भारत के विविध लोकनाट्य रूपों में भी *नाट्यशास्त्र* की गहरी छाप देखी जा सकती है। उत्तर भारत की *रामलीला* इस परंपरा का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें संवाद, शारीरिक हाव-भाव, पारंपरिक परिधान, संगीत तथा मंचीय विन्यास सभी भरत मुनि के सिद्धांतों से अनुप्राणित हैं।

इसी प्रकार बंगाल की *जात्रा*, महाराष्ट्र का *तमाशा* तथा उत्तर भारत की *नौटंकी* जैसे लोकनाट्य रूपों में भी भावाभिनय, मुखर संवादशैली एवं गीत-संगीत का उपयोग दर्शकों में रस उत्पन्न करने हेतु किया जाता है, जो प्रत्यक्षतः *नाट्यशास्त्र* की अवधारणाओं पर आधारित है।

4. दक्षिण-पूर्व एशिया में रामायण-आधारित रंगमंच परंपराएँ

भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव के परिणामस्वरूप कंबोडिया, थाईलैंड, बाली (इंडोनेशिया) इत्यादि देशों में भी रामायण पर आधारित विशिष्ट रंगपरंपराओं का उद्भव हुआ। बाली के *केचक* नृत्यनाट्य तथा कंबोडिया की *रामायण नृत्यशैली* में भारतीय *नाट्यशास्त्र* के तत्व-मुद्रा, अभिनय, संगीतिकता एवं भावविधान-स्पष्टतः विद्यमान हैं।

इन देशों में रामायण केवल एक कथा न रहकर जीवंत सांस्कृतिक अनुभव बन चुकी है, जिसमें भारत की प्राचीन नाट्य-दृष्टि का अद्भुत संवाहन हुआ है।

5. संस्कृत नाट्यशास्त्रीय ग्रंथों में नाट्यकला का सिद्धांत

दंडी कृत *दशरूपक*, *अभिनवगुप्त* कृत *अभिनवभारती* जैसे ग्रंथों ने नाट्यशास्त्र की व्याख्या और विस्तार में अमूल्य योगदान दिया है। कालिदास के *अभिज्ञानशाकुंतलम्*, भवभूति के *मालती-माधव* तथा भीष्मदेव के *उत्तररामचरितम्* जैसे नाटकों में नाट्यशास्त्रीय नियमों का अनुपालन अत्यंत सूक्ष्मता से दृष्टिगोचर होता है। इन ग्रंथों व नाटकों में *रस निष्पत्ति*, *चरित्र गठन*, *संवाद योजना*, *नायक-नायिका भेद*, तथा *विभाव*, *अनुभाव*, *संचारी भाव* की अवधारणाओं का श्रेष्ठ उदाहरण मिलता है। ये ग्रंथ नाट्यशास्त्र की सैद्धांतिक परंपरा के आधार स्तंभ हैं, जो भारतीय रंगमंचीय बौद्धिकता की पराकाष्ठा को दर्शाते हैं।

नाट्यशास्त्र न केवल भारत की रंगपरंपरा की रीढ़ है, अपितु इसकी शिक्षाएँ और सिद्धांत विश्व रंगमंच को भी गहरे स्तर पर प्रभावित करते रहे हैं। चाहे वह कुटियाट्टम जैसे शास्त्रीय रूप हों, या रामलीला, जात्रा जैसे लोकनाट्य; अथवा कंबोडिया-बाली जैसे विदेशी मंच-हर स्थान पर नाट्यशास्त्र की छाया विद्यमान है। इस ग्रंथ ने अभिनय, नृत्य, संगीत, रंगमंच-रचना और दर्शक-मनःस्थितियों पर आधारित ऐसी सर्वकालिक प्रणाली दी है, जो नाट्यकला के सार्वभौमिक दर्शन को प्रस्तुत करती है।

लोकनृत्य का सौंदर्य और जीवन्तता

लोकनृत्य, शास्त्रीय नृत्य की तुलना में सरल और सीधे होते हैं, लेकिन इनकी व्यावहारिक जीवन्तता और भावाभिव्यक्ति की शक्ति इन्हें अद्वितीय बनाती है। ये नृत्य उस समुदाय की संस्कृति, परंपराओं और दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा होते हैं। इन नृत्यों का सौंदर्य और लालित्य उनकी साधारणता में छिपा होता है, जो इन्हें हर स्थान और समय में प्रासंगिक बनाता है।

ताण्डव और **लास्य** के शास्त्रीय रूपों ने नृत्य को अनुशासित किया और इसे एक कला रूप के रूप में प्रतिष्ठित किया, वहीं लोकनृत्य ने अपनी सरलता, भावनात्मक प्रभाव और जीवन्तता के द्वारा भारतीय संस्कृति में अपनी महत्ता बनाए रखी। शास्त्रीय नृत्य और लोकनृत्य दोनों ही भारतीय कला और संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं, जो एक-दूसरे के पूरक और समर्थक हैं।

Scanned with OKEN Scanner

कालिदास का योगदान

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वह भारतीय काव्य परंपरा के महान आचार्य थे, जिनका योगदान भारतीय साहित्य में अनमोल है। उनके काव्य न केवल साहित्यिक दृष्टि से श्रेष्ठ हैं, बल्कि उनमें जीवन के उच्चतम आदर्शों और भावनाओं का प्रगट भी होता है। कालिदास के काव्य, **जैसे** रघुवंश, कुमारसंभव और मालविकाग्निमित्र ने न केवल संस्कृत साहित्य को गौरवान्वित किया, बल्कि भारतीय काव्यशास्त्र में अपनी एक विशेष पहचान बनाई।

महाभारत और **भगवद्गीता** ने न केवल भारतीय समाज को, बल्कि समग्र मानवता को जीवन के आदर्श, धर्म, कर्म, और भक्ति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया है। गीता के उपदेश आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने वह हजारों साल पहले थे। वहीं महाकवि कालिदास ने अपने काव्य के माध्यम से भारतीय साहित्य को एक नई दिशा दी, जो आज भी साहित्यिक दुनिया में एक अमूल्य धरोहर के रूप में जानी जाती है।

महाकवि कालिदास ने भारतीय संस्कृति को अपनी कृतियों के माध्यम से न केवल आत्मसात किया, बल्कि उसे व्यापक रूप से प्रचारित और प्रसारित भी किया। कवि रवींद्रनाथ ठाकुर के अनुसार, कालिदास ने जीवन के दुःख और संकटों का सामना करके जो अमृत प्राप्त किया, उसे हमें प्रदान किया। महर्षि अरविंद का मानना था कि अगर वाल्मीकि, व्यास और कालिदास का साहित्य ही बचा रहे और बाकी सब नष्ट हो जाए, तो भी भारत को कोई हानि नहीं होगी। कालिदास ने भारतीय साहित्य को जो योगदान दिया है, वह अनमोल और अद्वितीय है।

कालिदास की प्रमुख कृतियों में सात प्रमुख कृतियाँ मानी जाती हैं, जो उनके साहित्यिक काव्य कौशल और दर्शन को स्पष्ट रूप से व्यक्त करती हैं। इनमें से प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं:

1. **ऋतुसंहार:** यह कालिदास की एक प्रारंभिक काव्य रचना है, जो उनकी युवा प्रतिभा का परिचय देती है। इसमें उन्होंने प्रकृति, ऋतुओं और प्रेमी युगल के बीच का संबंध बेहद सुंदर तरीके से व्यक्त किया है। यह काव्य ऋतुओं के बदलते प्रभाव को प्रेमी युगल की भावनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करता है। ग्रीष्म ऋतु से वसंत ऋतु तक की यात्रा में छः ऋतुओं का वर्णन किया गया है, जो इसे संस्कृत साहित्य के ऋतुवर्णन में एक अद्वितीय काव्य बनाता है।

2. **मेघदूतम्:** अगर कालिदास ने केवल *मेघदूत* ही लिखा होता, तो भी उनकी गिनती विश्व के महान कवियों में होती। इस काव्य में एक यक्ष की कहानी है, जिसे अपनी पत्नी से दूर किया गया था और वह मेघ को अपना संदेश भेजने के लिए दूत के रूप में भेजता है। इसमें रामगिरि से अलका तक के मार्ग का सुंदर वर्णन किया गया है, जो प्रेम और प्रकृति के अद्भुत मेल को दर्शाता है।
3. **कुमारसंभवम्:** यह महाकाव्य भगवान शिव और पार्वती के विवाह की कथा पर आधारित है। इसमें कालिदास ने शिव और पार्वती के मिलन को केंद्रित कर उनके तप, प्रेम और कार्यों को निखारा है। काव्य का संदेश यह है कि जीवन में सफलता केवल तप और समर्पण से प्राप्त होती है, न कि कामवासना से। काव्य में शिव के तीसरे नेत्र द्वारा कामदेव के भस्म होने की घटना भी वर्णित है। यह महाकाव्य अधूरा रह गया था, लेकिन इसके संदेश और प्रभाव अभी भी अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।
4. **रघुवंशम्:** यह संस्कृत साहित्य का एक उत्कृष्ट महाकाव्य है, जिसमें सूर्यवंश के विभिन्न राजाओं का वर्णन किया गया है, जिनमें राजा दिलीप, रघु, अज, दशरथ और राम जैसे महान नायक शामिल हैं। रघुवंशम् में भारतीय राजाओं के आदर्श और उनके कर्तव्यों का निरूपण किया गया है। राम का सीतात्याग और भारतीय दाम्पत्य के आदर्श की सुंदर अभिव्यक्ति इस महाकाव्य में की गई है, जो भारतीय संस्कारों और नैतिकताओं को उजागर करती है।

नाटक: कालिदास के नाटकों का भी विशेष महत्व है। उनके तीन प्रमुख नाटक हैं, जो संस्कृत नाटक साहित्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इनमें से सबसे प्रसिद्ध है–

- **शाकुन्तलम्**
- **विक्रमोर्वशीम्**
- **मालविकाग्निमित्रम्**

5. **मालविकाग्निमित्रम्:** यह कालिदास का एक प्रारंभिक नाटक है, जिसमें राजा अग्निमित्र और मालविका के प्रणय की कहानी प्रस्तुत की गई है। राजा अग्निमित्र केवल चित्र में ही मालविका को देखता है और उसकी सुंदरता से मोहित हो जाता है। राजा के प्रेम को प्राप्त करने के लिए वह अपने विदूषक मित्र गौतम से मदद लेता है। गौतम द्वारा अपनाई गई युक्तियों और चातुरी से दोनों का मिलन होता है। यह नाटक कालिदास के नाट्य कौशल की प्रारंभिक रचना है, जिसमें उनके महाकवित्व की झलक दिखाई देती है, जो बाद में अभिज्ञानशाकुन्तलम् महान काव्य रचनाओं का रूप धारण करता है।

Scanned with OKEN Scanner

6. **विक्रमोर्वशीयम्:** यह नाटक पृथ्वी के महान सम्राट पुरूरवा और स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी के बीच के प्रेम की कथा पर आधारित है। नाटक में केशी नामक राक्षस उर्वशी का अपहरण करता है, और पुरूरवा उसे राक्षस से मुक्त करने के लिए संघ करता है। इस नाटक में प्रेम, विछोड़ और पुनः मिलन की भावना को अद्भुत तरीके से चित्रित किया गया है। विक्रमोर्वशीयम् का चौथा अंश आज भी नृत्यनाटिक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है और यह दर्शकों के दिलों में प्रेम और कला का र संचारित करता है। इस नाटक में कालिदास ने प्रेम और प्रकृति के अद्वितीय मिश्र को दर्शाया है, जो उन्हें एक महान नाटककार बनाता है।

7. **अभिज्ञानशाकुन्तलम्:** यह कालिदास की सबसे प्रसिद्ध और सर्वश्रेष्ठ कृतियों से एक है, जिसे संस्कृत साहित्य के सर्वोत्तम नाटकों में गिना जाता है। इस नाट की कहानी स्वर्ग की अप्सरा मेनका की पुत्री शकुन्तला और पृथ्वी के राजा दुष्यं के प्रेम संबंधों के इर्द-गिर्द घूमती है। शकुन्तला को महर्षि कण्व के आश्रम पालन-पोषण मिलता है, जहाँ वह राजा दुष्यंत से मिलती है और दोनों के बीच गंधर्व विवाह होता है। एक दिन, शकुन्तला दुर्वासा ऋषि का सत्कार करने चूक जाती है और उन्हें शाप मिल जाता है, जिससे राजा दुष्यंत उसे भूल जाते हैं लेकिन अंत में, शकुन्तला को राजा का ध्यान आकर्षित करने वाली एक अंगू मिलती है, और यह शाप टूट जाता है। दोनों का मिलन ऋषि मरीचि के आश्रम होता है, और उनका पुत्र भरत, जो बाद में महान सम्राट बनता है, इस मिलन क कारण बनता है। *अभिज्ञानशाकुन्तलम्* केवल एक प्रेमकथा है, बल्कि यह भारती संस्कृति, संस्कार और आदर्शों का भी अद्भुत चित्रण करती है। इस नाटक क अनुवाद पढ़कर यूरोप के महान कवि गेटे ने इसे अपने मस्तक पर रखा और नृ किया था, जो इसके वैश्विक प्रभाव और महत्व को दर्शाता है।

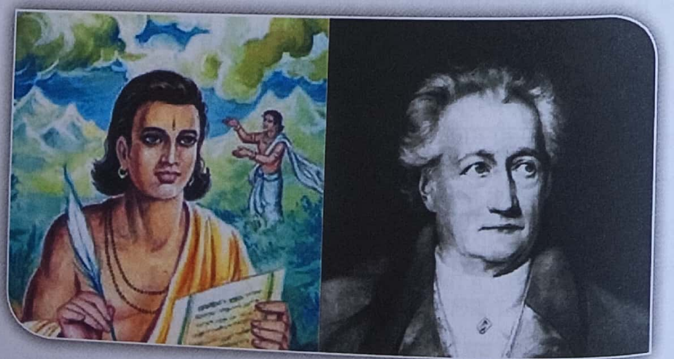

जोहान वोल्फगैंग वॉन गोएथे की प्रसिद्ध पंक्तियाँ, जो उन्होंने नाटक की प्रशंसा में लिखीं–

"Willst du den Himmel, die Erde mit Einem Namen begreifen,
Nenn' ich, Sakuntala, dich, und so ist alles gesagt."

(**अनुवाद:** यदि तुम स्वर्ग और पृथ्वी को एक ही नाम में समेटना चाहो, तो मैं तुम्हें 'शकुन्तला' कहता हूँ-और इतना कहना ही सब कुछ कह देना है।)

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का वैश्विक साहित्य पर विशेषकर यूरोप में गहरा प्रभाव पड़ा:

- इसे 18वीं शताब्दी में जर्मन भाषा में अनुवादित किया गया (सर विलियम जोन्स और फ्रांज़ बॉप द्वारा)।
- इसे गोएथे, श्लेगेल, और अन्य रोमांटिक कवियों द्वारा अत्यंत सराहा गया।
- इसने पश्चिमी रंगमंचीय परंपरा और सौंदर्यशास्त्र को रोमांटिक और प्राच्यवादी आंदोलनों के दौरान गहराई से प्रभावित किया।

महाकवि कालिदास के नाटक न केवल भारतीय साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, बल्कि उन्होंने संस्कृत नाट्य कला को विश्वभर में प्रतिष्ठित किया। उनके नाटकों में प्रेम, प्रकृति, दर्शन और मानवता के गहरे तत्वों का अद्भुत मिश्रण मिलता है। *मालविकाग्निमित्रम्*, *विक्रमोर्वशीयम्* और *अभिज्ञानशाकुन्तलम्* नाटक कालिदास के लेखन के विविध पहलुओं को दर्शाते हैं और उनके महान काव्यात्मक कौशल को प्रदर्शित करते हैं। इन कृतियों के माध्यम से उन्होंने भारतीय संस्कृति और मानवीय भावनाओं का चित्रण अत्यंत सुंदरता से किया है, जो आज भी दुनिया भर के पाठकों और दर्शकों को प्रेरित करता है।

महाकवि भवभूति और उनकी कृतियाँ

महाकवि भवभूति संस्कृत साहित्य के एक महान रचनाकार के रूप में प्रसिद्ध हैं, जिनकी कृतियाँ कालिदास के साथ-साथ संस्कृत नाट्य साहित्य के सर्वोत्तम उदाहरणों में गिनी जाती हैं। भवभूति के नाटकों में करुण रस का अत्यधिक महत्व है, और उनकी कृतियाँ भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर मानी जाती हैं। उनके तीन प्रमुख नाटक हैं:

1. **महावीरचरितम्:** यह नाटक रामायण के राम के प्रारंभिक जीवन पर आधारित है, जिसमें राम के संघर्ष और त्याग की कथा को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया

है। नाटक में भवभूति ने राम के व्यक्तित्व को अत्यंत करुणापूरित तरीके से उकेरा है, और राम की नायकत्व की स्थिति को दैवीय निर्णयों और परिस्थितियों के प्रभाव में देखा है। राम के जीवन में आने वाली कठिनाइयाँ और उनके द्वारा किए गए त्याग दर्शाते हैं कि नायक केवल अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं से नहीं, बल्कि उच्चतम सत्य और धर्म से प्रेरित होता है।

2. **मालतीमाधवम्:** यह नाटक काल्पनिक प्रेमकथा पर आधारित है, जिसमें मालती और माधव के बीच प्रेम संबंधों का चित्रण है। यह नाटक महाकवि शूद्रक के मृच्छकटिकम् से प्रेरित लगता है, जिसमें शूद्रक ने समाज के विभिन्न पहलुओं को चित्रित किया था। मालती और माधव का प्रेम कहानी भव्यता और रंगीनता के साथ प्रस्तुत किया गया है, जिसमें सामाजिक और व्यक्तिगत संघर्षों का विवरण है।

3. **उत्तररामचरितम्:** यह नाटक भवभूति की सबसे प्रसिद्ध रचना मानी जाती है, जिसमें राम के जीवन के बाद के घटनाओं का चित्रण किया गया है। इस नाटक में राम और सीता के बीच के करुण संबंधों को अत्यंत भावुक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। भवभूति ने राम के राज्याभिषेक के बाद की स्थिति को विस्तार से दिखाया, जहां राम सीता को त्यागने का निर्णय लेते हैं, लेकिन यह निर्णय परिस्थितिवश लिया जाता है, न कि स्वेच्छा से। भवभूति ने प्रेम और त्याग के इस परिष्कृत रूप को दर्शाते हुए राम और सीता के पुनर्मिलन को एक कलात्मक और भावनात्मक चरमोत्कर्ष तक पहुँचाया है। इस नाटक के कारण हीकरुण रस का महत्व बढ़ा और संस्कृत नाट्य साहित्य में इसे एक नई दिशा मिली।

भवभूति का काव्यशास्त्र पर प्रभाव

भवभूति की कृतियाँ संस्कृत साहित्य के करुण रस के प्रवर्तक के रूप में प्रसिद्ध हुईं। उनके नाटक*उत्तररामचरितम्* प्रेम और त्याग के बीच के परस्पर विरोधी भावनाओं को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि यह आज भी काव्यशास्त्र में एक महत्वपूर्ण उदाहरण माना जाता है। भवभूति ने यह सिद्ध कर दिया कि नायक की नायकत्व केवल उसकी वीरता और शक्तियों में नहीं, बल्कि उसकी करुणा और परिस्थितियों के प्रति संवेदनशीलता में भी निहित होती है।

संस्कृत साहित्य की महाकाव्य और नाट्य परंपरा

भवभूति के साथ संस्कृत साहित्य में महाकाव्य और नाट्यकाव्य की परंपरा में कई अन्य महत्वपूर्ण कवियों का योगदान रहा है। महाकवि कालिदास और भवभूति के अतिरिक्त, महाकवि भारवि, माघ और श्रीहर्ष ने भी अपने महाकाव्य जैसे *किरातार्जुनीयम्*, *शिशुपालवधम्* और *नैषधीयचरितम्*स साहित्य में अद्वितीय योगदान दिया। इसके अलावा, संस्कृत के महान गद्य लेखक जैसे बाण, दण्डी, आचार्य धनञ्जय, और वामन ने भी अपनी काव्यशास्त्रीय रचनाओं से संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया।

प्राकृत और क्षेत्रीय भाषाओं का विकास

संस्कृत साहित्य के बाद, प्राकृत और उसके अपभ्रंश रूपों से उत्पन्न क्षेत्रीय भाषाओं का विकास हुआ। तमिल, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बांग्ला, मैथिली, और अन्य भाषाओं में भक्ति और वीर रस के काव्य रचनाओं का विकास हुआ। इन क्षेत्रीय भाषाओं में विशेष रूप से भक्ति काव्य, जैसे कि *तिरुवाचकम्* (माणिक्कवाचकर), *भागवत* (जगन्नाथ दास) और मराठी में *अभंग* (एकनाथ, तुकाराम) ने धार्मिक और सामाजिक चेतना का प्रचार किया।

महाकवि भवभूति के नाटक संस्कृत नाट्य साहित्य की उच्चतम कृतियाँ मानी जाती हैं, जो न केवल करुण रस के प्रवर्तक रहे, बल्कि उन्होंने प्रेम और त्याग के दर्शन को एक नए रूप में प्रस्तुत किया। उनके नाटकों के कारण ही करुण रस का महत्व और प्रचलन बढ़ा, और संस्कृत साहित्य को एक नई दिशा मिली। भवभूति की कृतियों का प्रभाव केवल संस्कृत साहित्य तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उनके सिद्धांत और लेखन ने अन्य भाषाओं के साहित्यकारों को भी प्रेरित किया।

तालिका: भारतीय नाटककार और कलाकार जिन्हें नाट्यशास्त्र, नृत्य, संगीत और रंगमंच में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

नाम	युग	क्षेत्र	उपलब्धियां एवं सरकारी सम्मान
भरत मुनि	प्राचीन	नाट्य (नृत्य एवं रंगमंच)	*नाट्यशास्त्र* की रचना की, भारतीय रंगमंच की आधारशिला रखी; इसे "पाँचवाँ वेद" माना जाता है।

नाम	युग	क्षेत्र	उपलब्धियां एवं सरकारी सम्मा
कालिदास	प्राचीन	संस्कृत नाटक	*अभिज्ञान शाकुंतलम*, *मेघदूत*, *मालविकाग्निमित्रम्* जैसे महान नाट की रचना की।
भास	प्राचीन	संस्कृत नाटक	*स्वप्नवासवदत्तम* और अन्य कई प्रसिद्ध नाटकों के रचनाकार।
शूद्रक	प्राचीन	संस्कृत नाटक	*मृच्छकटिक* (*द लिटिल क्ले कार्ट*) रचना की, जो अत्यंत प्रसिद्ध नाटक
भवभूति	मध्यकालीन	संस्कृत नाटक	*उत्तररामचरित* और *मालतीमाधव* जै उत्कृष्ट नाटकों के लिए प्रसिद्ध।
विशाखदत्त	मध्यकालीन	संस्कृत नाटक	*मुद्राराक्षस* की रचना की, जो चाणक्य और चंद्रगुप्त मौर्य की राजनीति पर आधारित है।
रवींद्रनाथ टैगोर	आधुनिक	बंगाली नाटक	*डाकघर*, *चित्रांगदा* और *रेड ओलियंडर्स* की रचना; **साहित्य का नोबेल पुरस्कार** प्राप्त।
विजय तेंडुलकर	आधुनिक	मराठी नाटक	*घाशीराम कोतवाल* और *सखाराम बाइंडर* जैसी प्रमुख रचनाएँ; **पद्म भू** प्राप्त।
हबीब तनवीर	आधुनिक	हिंदी और लोक थिएटर	*चरणदास चोर* और अन्य नाटकों के लिए प्रसिद्ध; **पद्म भूषण** प्राप्त।
बादल सरकार	आधुनिक	बंगाली नाटक	*इन्द्रजीत*, *पगला घोड़ा* जैसी रचनाएँ; **पद्म श्री** से सम्मानित।
भीष्म साहनी	आधुनिक	हिंदी नाटक	*तमस* लिखा, साम्प्रदायिक सौहार्द प आधारित; **पद्म भूषण** से सम्मानित।
के.वी. सुब्बन्ना	आधुनिक	कन्नड़ रंगमंच	निनासम थिएटर संस्थान के संस्थापक **पद्म श्री** से सम्मानित।

नाम	युग	क्षेत्र	उपलब्धियां एवं सरकारी सम्मान
रतन थियाम	समकालीन	मणिपुरी रंगमंच	विशिष्ट रंगमंचीय प्रस्तुतियों के लिए प्रसिद्ध; **पद्म श्री** प्राप्त।
कन्हैलाल हेइसनाम	समकालीन	मणिपुरी रंगमंच	नवाचारपूर्ण रंगमंच कार्यों के लिए प्रसिद्ध; **पद्म श्री** से सम्मानित।
शंभू मित्रा	आधुनिक	बंगाली रंगमंच	*रक्तकरबी* जैसे नाटकों के लिए प्रसिद्ध; **पद्म भूषण** प्राप्त।
पंडित बिरजू महाराज	आधुनिक	कथक नृत्य	कथक में उत्कृष्टता के लिए **पद्म विभूषण** से सम्मानित।
उस्ताद बिस्मिल्लाह खान	आधुनिक	शहनाई (वाद्य संगीत)	शहनाई को वैश्विक मंच पर ले जाने के लिए **भारत रत्न** प्राप्त।
पंडित जसराज	आधुनिक	हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायन	भारतीय शास्त्रीय संगीत में योगदान के लिए **पद्म विभूषण** प्राप्त।
रवि शंकर	आधुनिक	सितार (वाद्य संगीत)	**भारत रत्न** और **पद्म पुरस्कार** प्राप्त; अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध।
लता मंगेशकर	आधुनिक	पार्श्व गायन	भारतीय संगीत में महान योगदान के लिए **भारत रत्न** प्राप्त।
सत्यजीत रे	आधुनिक	फिल्म निर्देशन	**ऑनरेरी ऑस्कर** प्राप्त करने वाले पहले भारतीय; **भारत रत्न** सम्मानित।
जाकिर हुसैन	आधुनिक	तबला (वाद्य संगीत)	वैश्विक स्तर पर तबला के प्रचार-प्रसार के लिए **पद्म भूषण** प्राप्त।
ए.आर. रहमान	आधुनिक	संगीत रचना	**पद्म भूषण** प्राप्त; *स्लमडॉग मिलियनेयर* के लिए **ऑस्कर पुरस्कार**।
मल्लिका साराभाई	आधुनिक	शास्त्रीय नृत्य और थिएटर	भारतीय रंगमंच और नृत्य में योगदान के लिए **पद्म भूषण** प्राप्त।

Scanned with OKEN Scanner

नाम	युग	क्षेत्र	उपलब्धियां एवं सरकारी सम्मान
केलुचरण महापात्रा	आधुनिक	ओडिसी नृत्य	ओडिसी नृत्य को पुनर्जीवित करने के लिए **पद्म विभूषण** प्राप्त।
रुक्मिणी देवी अरुंडले	आधुनिक	भरतनाट्यम नृत्य	भरतनाट्यम को नई पहचान देने के लिए **पद्म भूषण** से सम्मानित।
एम.एस. सुब्बलक्ष्मी	आधुनिक	कर्नाटिक गायन	**भारत रत्न** प्राप्त करने वाली पहली गायिका; UN में प्रस्तुति दी।
टी. बाल सरस्वती	आधुनिक	भरतनाट्यम नृत्य	भरतनाट्यम में उत्कृष्ट योगदान के लि **पद्म विभूषण** प्राप्त।
हरिप्रसाद चौरसिया	आधुनिक	बांसुरी (वाद्य संगीत)	हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में योगदान के लिए **पद्म विभूषण** प्राप्त।
शोवना नारायण	आधुनिक	कथक नृत्य	**पद्म श्री** प्राप्त, कथक के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका।
कुमार गंधर्व	आधुनिक	हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायन	विशिष्ट गायन शैली के लिए **पद्म विभूषण** प्राप्त।

मध्यकालीन और आधुनिक भारतीय साहित्य

मध्यकालीन और आधुनिक भारतीय साहित्य में भक्ति, वीर रस, समाज सुधार, औ ऐतिहासिक काव्य परंपराओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। साहित्य के विभिन्न रूपों में समाज के बदलते दृष्टिकोण और विचारों को उजागर किया गया। इस विशेष काल में विभिन्न कवियों और लेखकों ने न केवल धार्मिक और भक्ति साहित्य रचा, बल्कि सामजिक और राष्ट्रवादी चेतना को भी अपने लेखन में स्थान दिया।

भक्ति साहित्य

हिंदी साहित्य में भक्ति परंपरा को समृद्ध करने में कई कवियों ने योगदान दिया। नामदेव, गुरु नानक, कबीर, बिहारी, सूरदास, रसखान, तुलसीदास, मीराबाई और अन्य कवियों ने भक्ति साहित्य को उच्चतम स्तर तक पहुँचाया। कबीर ने अपनी रचनाएँ **"पंचमेल**

खिचड़ी" जैसी मिश्रित लोकभाषा में कीं और **साखी, सबद,** तथा **रमैनी** के माध्यम से भक्ति, समाज-सुधार और आध्यात्मिक चेतना को अभिव्यक्त किया। (कबीर की भाषा को "पंचमेल खिचड़ी" कहा जाता है– लोकबोली + धर्म + दर्शन + प्रतीकात्मकता का मिश्रण।) तुलसीदास ने रामचरितमानस के माध्यम से राम के चरित्र को अवधी भाषा में प्रस्तुत किया। सूरदास और रसखान ने कृष्ण भक्ति की भावना को ब्रज भाषा में अभिव्यक्त किया। मीराबाई ने अपनी कृष्ण भक्ति अभिव्यक्तियों को हिन्दी, राजस्थानी और गुजराती में प्रकट किया।

वीर रस और ऐतिहासिक काव्य

मध्यकाल में वीर रस की प्रवृत्तियाँ भी प्रमुख थीं। चन्दबरदाई का *"पृथ्वीराज रासो"* और जगनिक का *"परमाल रासो"* जैसी काव्य रचनाएँ वीर गाथाओं का अद्भुत उदाहरण हैं। इन काव्यों में युद्ध, शौर्य, और वीरता के गुणों का बखान किया गया। विशेष रूप से *"आल्हा खण्ड"* को पं. ललिता प्रसाद मिश्र ने 1908 में आल्हा छंद में लिखा, जो एक वीरकाव्य था।

भक्ति काल के प्रमुख रचनाकार

सामाजिक सुधार और उपन्यास लेखन

समाज सुधारकों और लेखकों ने साहित्य के माध्यम से सामाजिक जागरूकता फैलाने का प्रयास किया। महर्षि दयानंद, विवेकानंद, पं. भगवदत्त, और अन्य सुधारकों ने भारती समाज की बुराइयों पर चर्चा की और सुधार की दिशा में विचार प्रस्तुत किए। इसी सम में उपन्यास लेखन का भी उत्कर्ष हुआ। *"चंद्रकांता"* (देवकीनंदन खत्री), *"गोदान"* (मुंशी प्रेमचंद्र), *"कामायनी"* (जयशंकर प्रसाद), *"साकेत"* (मैथिलीशरण गुप्त), *"झांसी की रानी"* (सुभद्राकुमारी चौहान) और *"गीतांजलि"* (रवींद्रनाथ ठाकुर) जैसे उपन्यासों ने समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया।

राष्ट्रप्रेम और सामाजिक मुद्दे

भारतीय साहित्य में राष्ट्रप्रेम और मानव मूल्य भी प्रमुख रहे। रवींद्रनाथ ठाकुर की *"गीतांजलि"* ने न केवल भारतीय संस्कृति और अध्यात्म का विस्तार किया, बल्कि विश्वबंधुत्व की भावना को भी व्यक्त किया। महाश्वेता देवी की *"हजार चौरासी की मां"* और बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की *"आनंदमठ"* जैसे उपन्यासों में भारतीय समाज की वास्तविकता और संघर्षों को दर्शाया गया।

- **नारी चेतना:** नारी चेतना पर भी कई महत्वपूर्ण कृतियाँ रची गईं। भारतीय साहित्य में नारी की भूमिका, अधिकार और समस्याओं पर विचार करने के लिए कई रचनाएँ लिखी गईं। विशेष रूप से नारी की सामाजिक स्थिति और उसकी पहचान को लेकर विमर्श किया गया।
- **समाज और संस्कृति की विविधता:** भारतीय साहित्य की यह समृद्ध परंपरा न केवल भारतीय समाज और संस्कृति को समृद्ध करती है, बल्कि विश्व में भारतीय दृष्टिकोण को प्रसार करने में भी सहायक रही है। इन रचनाओं में पर्यावरण, आदर्श, धर्म, विज्ञान, और मानवमूल्यों से संबंधित विचार प्रस्तुत किए गए हैं, जो आज भी प्रासंगिक हैं।

वैश्विक रंगमंच पर आधुनिक भारतीय नाट्यकला की प्रभावपूर्ण उपस्थिति

भारतीय रंगमंच की परंपरा केवल देशीय सीमाओं तक सीमित नहीं रही; इसके शास्त्रीय सिद्धांत, अभिनय शैलियाँ, कथ्य-निर्माण एवं मंचीय प्रयोग विश्व रंगमंच की अनेक

धाराओं को गहराई से प्रभावित करते रहे हैं। आधुनिक भारतीय रंगमंच ने वैश्विक रंगकर्म को किस प्रकार समृद्ध किया है, इसका विवेचन निम्नानुसार है-

1. अंतरराष्ट्रीय रंगमंच में भारतीय नाट्यपरंपरा का समावेश

भारतीय शास्त्रीय और लोकनाट्य परंपराओं ने अनेक अंतरराष्ट्रीय रंगकर्मी एवं निर्देशकों को आकर्षित किया है। सुप्रसिद्ध ब्रिटिश रंगनिर्देशक पीटर ब्रुक ने अपने ऐतिहासिक नाट्य-उपस्थापन *महाभारत* (1985) में भारतीय कथा-विधान, सांकेतिक अभिनय शैली तथा तत्वदर्शी दार्शनिक दृष्टिकोण को मूल रूप से समाविष्ट कर पश्चिमी रंगमंच को भारतीय महाकाव्य की आत्मा से साक्षात्कार कराया। इस महत्त्वपूर्ण कृति में भारतीय नाट्यशास्त्र के 'रस सिद्धांत' तथा 'नेत्र-अभिनय' के प्रयोग विशेष उल्लेखनीय हैं।

2. प्रयोगधर्मी रंगकर्म पर भारतीय सिद्धांतों की छाप

भारतीय रंगमंच की हस्तमुद्राएँ, रस-सिद्धांत, तथा प्रतीकात्मक अभिनय की अवधारणाओं ने वैश्विक प्रयोगधर्मी रंगमंच को नया आयाम प्रदान किया। फ्रांस की अरियान मनूशकीन (*Théâtre du Soleil*) तथा इटली के यूजेनियो बार्बा जैसे विख्यात रंगकर्मियों ने अपनी प्रस्तुतियों में कथकली व भरतनाट्यम की मुद्राभिनय पद्धतियों तथा गूढ़ नाट्यशास्त्रीय संकेतों का नवाचारपूर्वक प्रयोग किया। इन प्रयोगों ने पश्चिम के यथार्थवादी रंगमंच में प्रतीकात्मकता व रसात्मकता का नवसंचार किया।

3. भारतीय-पश्चिमी नाट्य परंपराओं का संगम

आधुनिक भारतीय रंगकर्मी तथा नाटककार पश्चिमी रंगमंच के तंत्रों व पद्धतियों को भारतीय नाट्य दृष्टि के साथ संयोजित कर रहे हैं। लंदन के *National Theatre*, न्यूयॉर्क के *Broadway*, तथा अन्य प्रमुख मंचों पर भारतीय कथावस्तु, मिथकीय आख्यान, व नाट्यसौंदर्य का प्रयोग हुआ है-उदाहरणार्थ *Bombay Dreams* (Andrew Lloyd Webber) तथा *The Merchants of Bollywood*। इन प्रस्तुतियों ने भारतीय रंगसंसार के भव्य दृश्यबोध, संगीतात्मकता, व गतिक अभिनय को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित किया।

4. उत्तर-औपनिवेशिक रंगकर्म में भारतीय दृष्टि का प्रभाव

आधुनिक भारतीय नाटककारों ने सामाजिक पहचान, औपनिवेशिक विरासत, एवं सांस्कृतिक द्वंद्व जैसे विषयों को केंद्र में रखकर ऐसे नाटकों की रचना की है, जिनका प्रभाव विश्व के उत्तर-औपनिवेशिक रंगमंच पर पड़ा है। अफ्रीका, कैरिबियन तथा दक्षिण-पूर्व एशिया में भी इसी पद्धति के रंगकर्म को नया आत्मबोध मिला है, जिसमें अपनी सांस्कृतिक अस्मिता की पुनर्खोज प्राथमिक है।

Scanned with OKEN Scanner

5. अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारतीय रंगनिर्देशकों की उपस्थिति

भारतीय नाट्यनिर्देशक रतन थियम ने अपने मणिपुरी रंगमंच की विशिष्ट शैली को यूरोप तथा एशिया के रंगमंच महोत्सवों में प्रस्तुत कर विश्व मंच पर भारतीय रंगपरंपरा की गरिमा को प्रतिष्ठित किया। उनकी प्रस्तुतियाँ-जैसे चक्रव्यूह-भारतीय मिथकीय संदर्भों, मार्शल आर्ट (युद्ध कलाएं) तथा काव्यात्मक दृश्य भाषा का अद्भुत संगम हैं, जो विश्व के आधुनिक एवं प्रयोगधर्मी रंगमंच (अवां-गार्द थिएटर) को प्रभावित कर रही हैं।

6. वैश्विक सिनेमा और मल्टीमीडिया में भारतीय रंगशैली

भारतीय रंगमंच की कथा-विधान शैली तथा मंचीय भाषा ने वैश्विक सिनेमा, विशेषकर संगीतमय रंगकर्म (Musical Theatre) पर भी अपनी छाप छोड़ी है। बॉलीवुड की संगीतमय फिल्मों के कथानक व दृश्य-संयोजन शैली ने ब्रॉडवे व हॉलीवुड की प्रस्तुतियों को प्रभावित किया है।

आधुनिक भारतीय रंगमंच ने केवल देशीय रंगपरंपराओं को नवीनीकृत ही नहीं किया, अपितु वैश्विक रंगकर्म को भी अपने प्राचीन शास्त्रों, समृद्ध नाट्यपरंपरा तथा अभिनव प्रयोगों से अनुप्राणित किया है। नाट्यशास्त्र का 'लोकानुकरण' तथा 'रस निष्पत्ति' का शाश्वत सिद्धांत आज भी विश्व रंगमंच के प्रयोगधर्मी मनीषियों को नई दृष्टि प्रदान कर रहा है।

निष्कर्ष

भारतीय साहित्य के विभिन्न आयामों को समझते हुए यह कहा जा सकता है कि यह केवल एक सांस्कृतिक धरोहर नहीं है, बल्कि समाज, संस्कृति, धर्म और देशभक्ति के गहरे संकेत भी प्रदान करता है। इन कृतियों के माध्यम से लेखकों ने सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक चेतना को उजागर किया और भारतीय समाज को एक नए दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। भारतीय शास्त्रीय कला, साहित्य और संगीत आध्यात्मिकता, संस्कृति और रचनात्मकता का गहरा संगम हैं, जो सदियों की परंपरा से आकारित हुए हैं। जैसे प्राचीन विद्वान भरतमुनी के ग्रंथों में नाट्यशास्त्र और संगीत के जटिल प्रणालियों को समझने का एक व्यापक ढांचा प्रस्तुत किया गया है, जो जीवन के भावनात्मक, आध्यात्मिक और दार्शनिक आयामों से गहरे रूप से जुड़े हुए हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत, जो ध्वनि, राग और लय पर जोर देता है, न केवल एक कलात्मक रूप के रूप में कार्य करता है, बल्कि यह आध्यात्मिक जागरूकता और भावनात्मक अभिव्यक्ति का एक

उपकरण भी है। गुरु-शिष्य परंपरा इस ज्ञान के संरक्षण और निरंतरता को सुनिश्चित करती है, इसे पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाती है। कालिदास और भवभूति जैसे महान साहित्यकारों से समृद्ध भारतीय साहित्य मानव अनुभव की नैतिक और दार्शनिक अन्वेषण प्रस्तुत करता है, जबकि जीवंत नृत्य और लोक परंपराएं भारत की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती हैं। ये सभी कलात्मक रूप मिलकर एक समृद्ध कंबल की तरह हैं, जो लगातार प्रेरणा और प्रभाव प्रदान करते हुए दुनिया को जीवन के मूल स्वभाव और उच्च सत्य की खोज में शाश्वत अंतर्दृष्टियाँ प्रदान करते हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **Bharata Muni.** *Nāṭyaśāstra.* Translated by Manomohan Ghosh, Parimal Publications, 2005. ISBN: 978-8171100026.
2. **Abhinavagupta.** *Abhinavabhāratī: Abhinavagupta's Commentary on Bharata's Nāṭyaśāstra Chapter XXVIII.* Translated with historical explanations by Anupā Pāṇḍe, Indian Institute of Technology Bombay, Publication Date Not Specified.
3. **Mehta, Tarla.** *Sanskrit Play Production in Ancient India.* Motilal Banarsidass Publishers, 1995. ISBN: 978-8120810570.
4. **Tripathi, Radhavallabh.** *Lectures on the Nāṭyaśāstra.* Centre of Advanced Study in Sanskrit, University of Poona, 1991. ISBN: Not Available.
5. **Śārṅgadeva.** *Saṅgīta Ratnākara: An Ancient Treatise on Hindu Music.* Translated by R.K. Shringy and Prem Lata Sharma, Gyan Publishing House, 2024. ISBN: 978-9367807033.
6. **Te Nijenhuis, Emmie.** *Indian Music: History and Structure.* Brill Academic Publishers, 1974. ISBN: 978-9004038482.
7. **Vatsyayan, Kapila.** *Dance in Indian Painting.* Abhinav Publications, 1982. ISBN: 978-8170171539.
8. **Pollock, Sheldon, editor.** *A Rasa Reader: Classical Indian Aesthetics.* Columbia University Press, 2016. ISBN: 978-0231173902.
9. **Motilal Banarsidass Publishers.** *Indian Theatre: Traditions of Performance.* Motilal Banarsidass Publishers, 2006. ISBN: 978-8120820500.
10. **Jeste, Meena Devadatta.** *Arts in the Purāṇas: A Study.* Bhandarkar Oriental Research Institute, 1973. ISBN: Not Available.
11. **Chattopadhyay, Malyaban.** "A Historical Study of Ancient Indian Theatre-Communication in the Light of Nāṭyaśāstra." *Global Media Journal – Indian Edition*, vol. 4, no. 2, Winter 2013, ISSN: 2249-5835. https://www.academia.edu/11936647/A_Historical_study_of_ancient_indian_theatre_communication_in_the_light_of_natyasastra
12. **Kalyani Kala Mandir.** "The Importance of Dance in Kalidasa's Works." *Kalyani Kala Mandir*, 2024. https://kalyanikalamandir.com/the-importance-of-dance-in-kalidasas-works/
13. **Anonymous.** "Indian Dramatics-Nāṭyaśāstra and Abhijñāna-śākuntalam." *Academia.edu*,https://www.academia.edu/9207335/Indian_Dramatics_Natyashastra_and_Abhigyanshakuntalam

अनुशंसित पठन सामग्री

1. नाट्यवेद का प्रारंभ किससे संबंधित है?
   (क) भरतमुनि
   (ख) नटराज शिव
   (ग) ब्रह्माजी
   (घ) ऋग्वेद
2. भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के सिद्धांतों का प्रभाव निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में नहीं देखा गया?
   (क) बाली
   (ख) जावा
   (ग) यूरोप
   (घ) म्यांमार
3. भारतीय नाट्यकला का प्राचीनतम ग्रंथ कौन सा है?
   (क) रामायण
   (ख) नाट्यशास्त्र
   (ग) महाभारत
   (घ) मुद्राराक्षसम्
4. भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में कितने रसों का वर्णन किया है?
   (क) सात
   (ख) आठ
   (ग) नौ
   (घ) दस

5. नाट्यशास्त्र के अनुसार, नाटक का मुख्य उद्देश्य क्या है?
   (क) केवल मनोरंजन
   (ख) धार्मिक उपदेश देना
   (ग) मानव की संवेदनाओं और चेतना को जागृत करना
   (घ) लोक संस्कृति का प्रचार
6. भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के 33वें अध्याय में किसका उल्लेख किया गया है?
   (क) अभिनय के प्रकार
   (ख) संगीत और वाद्य यंत्रों की उत्पत्ति
   (ग) नाट्यकला की उत्पत्ति
   (घ) रस सिद्धांत
7. प्राचीन भारत में स्वाति मुनि ने संगीत की उत्पत्ति के लिए प्रेरणा कहाँ से प्राप्त की?
   (क) समुद्र की लहरों से
   (ख) वर्षा की बूंदों से
   (ग) पक्षियों के गीत से
   (घ) वायु की ध्वनि से
8. रवीन्द्रनाथ ठाकुर की गीतांजलि में प्रमुख रूप से कौन सी भावना व्यक्त की गई है?
   (क) राजनीतिक व्यंग्य
   (ख) सार्वभौमिक भाईचारा और आध्यात्मिकता
   (ग) सामाजिक यथार्थवाद
   (घ) ऐतिहासिक विवरण
9. ब्रह्माजी ने नाट्यशास्त्र की रचना में किस वेद से "गीत" लिया?
   (क) ऋग्वेद
   (ख) सामवेद
   (ग) यजुर्वेद
   (घ) अथर्ववेद

Scanned with OKEN Scanner

10. नाट्यशास्त्र को किस प्रकार का वेद कहा गया है?

(क) पंचम वेद

(ख) चतुर्थ वेद

(ग) पौराणिक वेद

(घ) उपवेद

11. भरतमुनि ने नाट्य के माध्यम से किन पुरुषार्थों की प्राप्ति का उल्लेख किया है?

(क) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष

(ख) केवल धर्म और अर्थ

(ग) केवल काम और मोक्ष

(घ) केवल ज्ञान और शिक्षा

12. निम्नलिखित में से किस कवि ने ब्रज भाषा में कृष्ण भक्ति व्यक्त की है?

(क) कबीर

(ख) तुलसीदास

(ग) सूरदास

(घ) नामदेव

13. "धर्म्यं यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धिविवर्द्धनम्।" का क्या अर्थ है?

(क) नाट्य केवल मनोरंजन के लिए है।

(ख) नाट्य धर्म, यश, आयु और बुद्धि को बढ़ाता है।

(ग) नाट्य केवल सामाजिक आदर्श स्थापित करता है।

(घ) नाट्य शारीरिक शक्ति प्रदान करता है।

14. नाट्य के माध्यम से किसे विश्रांति और शांति मिलती है?

(क) विद्वानों को

(ख) दुःख, श्रम और शोक से पीड़ितों को

(ग) समाज के नेताओं को

(घ) केवल कलाकारों को

15. भारतीय संगीत में नाद का सूक्ष्मतम रूप क्या है?

(क) स्वर

(ख) श्रुति

(ग) आलाप

(घ) राग

16. नाट्य का कौन-सा उद्देश्य दर्शकों की संवेदनशीलता को बढ़ाता है?

(क) रसों और भावों के माध्यम से

(ख) केवल दृश्य प्रभाव से

(ग) नायक और खलनायक के प्रदर्शन से

(घ) संगीत और वाद्य से

17. भरतमुनि के अनुसार नाट्य किस प्रकार का माध्यम है?

(क) केवल धार्मिक शिक्षा का

(ख) केवल व्यक्तिगत उत्थान का

(ग) लोकमंगल और आत्मसाक्षात्कार का

(घ) मनोरंजन और ज्ञान का

18. नाट्य का कौन-सा रूपक हास्य प्रधान है?

(क) प्रहसन

(ख) व्यायोग

(ग) समवकार

(घ) भाण

19. भारतीय संगीत में "अनाहत नाद" का क्या महत्व है?

(क) इसे केवल वाद्य यंत्रों से उत्पन्न किया जा सकता है।

(ख) यह आंतरिक, सूक्ष्म और दिव्य ध्वनि है।

(ग) यह केवल स्वर साधना के लिए उपयोगी है।

(घ) यह सामान्य जन के लिए समझना कठिन है।

Scanned with OKEN Scanner

20. "न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं" श्लोक किसकी व्यापकता को व्यक्त करता है?

(क) धर्मशास्त्र की

(ख) नाट्यशास्त्र की

(ग) संगीतरत्नाकर की

(घ) लोककला की

21. गीत और वाद्य का नाट्य में क्या योगदान है?

(क) केवल नृत्य को अलंकृत करना

(ख) गीत को अलंकृत करना और भावों को गहराई देना

(ग) केवल मनोरंजन के लिए उपयोगी होना

(घ) केवल वाद्य यंत्र का प्रदर्शन करना

22. भरतमुनि के अनुसार नाट्य का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(क) समाज का मनोरंजन

(ख) जीवन के शुभ-अशुभ कर्मों का प्रतिबिंब

(ग) केवल धार्मिक प्रचार

(घ) सांस्कृतिक परंपरा का संरक्षण

23. "संवेदनशीलता का विकास" नाट्य के किस पक्ष से जुड़ा है?

(क) दृश्य और संगीत से

(ख) रसों और भावों से

(ग) केवल पात्रों के संवाद से

(घ) केवल कथा के माध्यम से

24. भरतमुनि ने नाट्य को किसका प्रतीक बताया है?

(क) आध्यात्मिक चेतना

(ख) जीवन के विविध पहलुओं का

(ग) केवल धार्मिक अनुष्ठानों का

(घ) केवल राजसी जीवन का

25. भारतीय संगीत में कितने स्वरों की व्यवस्था की गई है?

(क) पाँच

(ख) छह

(ग) सात

(घ) आठ

26. "नकार" और "दकार" का क्या सूचक है?

(क) वायु और अग्नि

(ख) प्राण और अग्नि

(ग) जल और पृथ्वी

(घ) अग्नि और आकाश

27. "नादेन व्यज्यते वर्णः" का तात्पर्य क्या है?

(क) नाद से संसार का अस्तित्व है।

(ख) नाद से स्वर उत्पन्न होते हैं।

(ग) नाद से वाक्य और व्यवहार बनते हैं।

(घ) नाद से केवल संगीत उत्पन्न होता है।

28. भारतीय संगीत में नाद का आधार क्या है?

(क) ध्वनि और वाद्य

(ख) नृत्य और गायन

(ग) स्वर और श्रुति

(घ) नाद और ताला

29. किस शास्त्र में नाद और उसकी महत्ता का वर्णन मिलता है?

(क) नाट्यशास्त्र

(ख) संगीतरत्नाकर

(ग) वेदांग

(घ) महाभाष्य

30. "अनाहत नाद" का अनुभव किसके द्वारा संभव है ?

(क) सामान्य व्यक्ति

(ख) वादक कलाकार

(ग) ऋषि-मुनि और ज्ञानी

(घ) केवल भरतमुनि

31. आहत नाद का क्या अर्थ है ?

(क) जो ध्वनि केवल देखी जा सके

(ख) जो ध्वनि केवल महसूस की जा सके

(ग) जो ध्वनि सुनी जा सके और आनंददायक हो

(घ) जो ध्वनि लिखी जा सके

32. श्रुति किससे विकसित होती है ?

(क) स्वर

(ख) नाद

(ग) राग

(घ) ग्राम

33. भारतीय संगीत में कितनी श्रुतियाँ होती हैं ?

(क) 12

(ख) 22

(ग) 7

(घ) 5

34. "रजयन्ति स्वतः स्वांत श्रोतृणामिति ते स्वराः" का क्या अर्थ है ?

(क) स्वर वह है जो केवल गाया जाता है

(ख) स्वर वह है जो सुनने वालों के चित्त को आनंदित करता है

(ग) स्वर वह है जो लिखित रूप में हो

(घ) स्वर वह है जो केवल उच्च स्वर में हो

35. तुलसीदास ने रामचरितमानस किस भाषा में लिखा था ?

(क) संस्कृत

(ख) ब्रज

(ग) हिंदी

(घ) अवधी

36. विकृत स्वर में कौन-सा स्वर शामिल नहीं है ?

(क) कोमल

(ख) तीव्र

(ग) शुद्ध

(घ) निषाद

37. "ग्राम" का क्या अर्थ है ?

(क) ध्वनि की तीव्रता

(ख) स्वरों का समूह

(ग) स्वरों की गति

(घ) राग का आरोह

38. मूर्च्छना में कितने स्वरों का क्रमिक आरोहण और अवरोहण होता है ?

(क) 5

(ख) 6

(ग) 7

(घ) 8

39. "औडव राग" में कितने स्वर होते हैं ?

(क) 7

(ख) 6

(ग) 5

(घ) 4

Scanned with OKEN Scanner

40. वादी स्वर को किसको उपमा दी गई है?

(क) सैनिक

(ख) राजा

(ग) मंत्री

(घ) शत्रु

41. संवादी स्वर को किससे उपमा दी गई है?

(क) राजा

(ख) मंत्री

(ग) सैनिक

(घ) कलाकार

42. "थाट" किसके लिए आधार है?

(क) राग निर्माण

(ख) मूर्च्छना निर्माण

(ग) आरोह निर्माण

(घ) ग्राम निर्माण

43. अलंकार का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(क) स्वर को पहचानना

(ख) संगीत को सुंदर और प्रभावशाली बनाना

(ग) ध्वनि को तीव्र बनाना

(घ) स्वरों को स्थिर करना

44. स्थायी वर्ण क्या है?

(क) स्वरों को क्रम से गाना

(ख) आरोह और अवरोह का मिश्रण

(ग) एक ही स्वर को बार-बार गाना

(घ) स्वरों को तीव्र रूप में गाना

45. राग की परिभाषा में क्या आवश्यक है?

(क) स्वर का आरोह

(ख) चित्त को आनंदित करना

(ग) आरोह-अवरोह का सही क्रम

(घ) केवल वादी और संवादी स्वर

46. रागों को उनकी स्वरों की संख्या के आधार पर कितने भागों में विभाजित किया गया है?

(क) चार

(ख) तीन

(ग) दो

(घ) पाँच

47. षाडव राग में कितने स्वर होते हैं?

(क) चार

(ख) पाँच

(ग) छह

(घ) सात

48. बंकिमचंद्र के आनन्दमठ के किस अध्याय में "वन्दे मातरम्" गीत का प्रथम उल्लेख मिलता है?

(क) "सत्यनिष्ठा"

(ख) "संन्यासी"

(ग) "भवनन्द"

(घ) "मदर-लैण्ड"

49. राग का सबसे कम प्रयुक्त स्वर क्या कहलाता है?

(क) वादी

(ख) संवादी

(ग) अनुवादी

(घ) विवादी

Scanned with OKEN Scanner

50. राग के दस लक्षणों में "ग्रह" का क्या अर्थ है?
(क) राग का मुख्य स्वर
(ख) राग का प्रारंभिक स्वर
(ग) राग का अंतिम स्वर
(घ) राग का उच्च स्वर

51. कण स्वर को और किस नाम से जाना जाता है?
(क) न्यास स्वर
(ख) शत्रु स्वर
(ग) स्पर्श स्वर
(घ) उच्च स्वर

52. "आकार आलाप" में किस ध्वनि का प्रयोग होता है?
(क) "नोम" और "तोम"
(ख) "आ"
(ग) "स्वराक्षर"
(घ) "बोल"

53. गमक का क्या उद्देश्य है?
(क) राग को सरल बनाना
(ख) राग में कंपन द्वारा भावनाओं को व्यक्त करना
(ग) राग के स्वर को तीव्र करना
(घ) केवल वादी स्वर को प्रमुख बनाना

54. "तान" किसमें प्रयुक्त होती है?
(क) राग के स्वरूप को द्रुत लय में विस्तार देने में
(ख) आलाप की संरचना में
(ग) गमक को बढ़ाने में
(घ) केवल स्वराक्षर में

55. उत्तर भारतीय संगीत में रागों का समय विभाजन किस प्रकार होता है?
(क) तीन भागों में
(ख) चार भागों में
(ग) दो भागों में
(घ) पाँच भागों में

56. "नोम तोम आलाप" में किन ध्वनियों का उपयोग होता है?
(क) "आ"
(ख) "स्वराक्षर"
(ग) "नोम" और "तोम"
(घ) "बोल"

57. तानों का कौन-सा प्रकार "कूटतान" कहलाता है?
(क) सीधी तान
(ख) जटिल और उलझी तान
(ग) कंपन युक्त तान
(घ) बोलयुक्त तान

58. "फिरत की तान" का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(क) स्वरों को उलझाना
(ख) स्वरों को विविधता देना
(ग) स्वरों का विस्तार करना
(घ) स्वर को शुद्ध करना

59. "राग के लक्षण" में "न्यास" का क्या तात्पर्य है?
(क) जिस स्वर पर राग समाप्त होता है
(ख) राग का आरंभिक स्वर
(ग) राग का मध्य स्वर
(घ) कम प्रयुक्त स्वर

Scanned with OKEN Scanner

60. "उत्तर भारतीय संगीत" और "दक्षिण भारतीय संगीत" में गमक का प्रयोग कैसे भिन्न होता है?
(क) दोनों में समान रूप से प्रयोग होता है
(ख) केवल दक्षिण भारतीय संगीत में प्रयोग होता है
(ग) उत्तर भारतीय संगीत में कम और दक्षिण भारतीय संगीत में अधिक प्रयोग होता है
(घ) उत्तर भारतीय संगीत में अधिक और दक्षिण भारतीय संगीत में कम प्रयोग होता है

61. ताल किसके लिए आधार प्रदान करता है?
(क) गीत
(ख) वाद्य
(ग) नृत्य
(घ) उपरोक्त सभी

62. मात्रा किसे स्पष्ट करती है?
(क) ताल की गति
(ख) ताल की लंबाई
(ग) स्वर का प्रकार
(घ) गाने का समय

63. लय कितने प्रकार की होती है?
(क) दो
(ख) चार
(ग) तीन
(घ) पाँच

64. "विलंबित लय" का क्या अर्थ है?
(क) मध्यम गति
(ख) तेज गति
(ग) धीमी गति
(घ) गाने का अंत

65. गुरु-शिष्य परंपरा का उद्देश्य क्या है?
(क) ज्ञान का संरक्षण
(ख) संगीत का अभ्यास
(ग) पारंपरिक ज्ञान का प्रसार
(घ) उपरोक्त सभी

66. प्राचीन समय की संगीत विधाओं में कौन सी विधा शामिल नहीं है?
(क) कपालगान
(ख) कंबलगान
(ग) ध्रुपद
(घ) प्रबंधगान

67. मार्ग संगीत क्या है?
(क) प्राचीन शास्त्रीय संगीत
(ख) देशी संगीत
(ग) लोक संगीत
(घ) आधुनिक संगीत

68. उत्तर भारत में कौन सा राग प्रचलित नहीं है?
(क) यमन
(ख) भैरवी
(ग) कंबोजी
(घ) दरबारी कानड़ा

69. कर्नाटक संगीत में कौन सा तत्व अधिक महत्वपूर्ण है?
(क) कृति
(ख) भैरवी
(ग) ध्रुपद
(घ) ठुमरी

Scanned with OKEN Scanner

70. भारतीय संगीत में वाद्य का स्थान किस ग्रंथ में वर्णित है?

(क) नाट्यशास्त्र

(ख) रामायण

(ग) महाभारत

(घ) गीत गोविंद

71. भारतीय संगीत के वाद्य कितने प्रकार के होते हैं?

(क) तीन

(ख) पाँच

(ग) चार

(घ) दो

72. 'सुषिर वाद्य' का उदाहरण कौन सा है?

(क) वीणा

(ख) तबला

(ग) बांसुरी

(घ) मंजीरा

73. संस्कृत का ज्ञान किसके लिए आवश्यक है?

(क) रागों के नाम जानने के लिए

(ख) शास्त्रीय संगीत के गहरे सिद्धांत समझने के लिए

(ग) गानों की लय समझने के लिए

(घ) केवल धार्मिक संगीत के लिए

74. भारतीय संगीत में "ताल" का क्या महत्त्व है?

(क) स्वर प्रदान करना

(ख) गति और समय का मापन

(ग) भाव उत्पन्न करना

(घ) केवल वाद्य का संचालन

75. किस प्रकार का वाद्य 'अवनद्ध वाद्य' कहलाता है?

(क) झंकार वाले वाद्य

(ख) हवा से बजने वाले वाद्य

(ग) चमड़े से ढँके वाद्य

(घ) धातु के वाद्य

76. आचार्य भरत के अनुसार वाद्ययंत्रों की रचना का आधार क्या था?

(क) पदार्थों के मिलाने और अलग करने

(ख) लय और ध्वनि

(ग) प्रकृति की ध्वनि

(घ) दिव्य ऊर्जा का उपयोग

77. प्राचीन ग्रंथों में चार प्रकार के वाद्ययंत्रों के सामूहिक नाम के रूप में कौन सा शब्द आया है?

(क) आतोद्य और तूर्य

(ख) स्वर और राग

(ग) नाद और वेद

(घ) श्रुति और लय

78. आचार्य भरत के अनुसार नाट्य, नर्तन, नृत्य और नृत्त के अंतर्गत कौन से तत्व शामिल हैं?

(क) नृत्य, संगीत और नाटक

(ख) राग, ताल और नृत्य

(ग) केवल संगीत और नृत्य

(घ) केवल लय और ध्वनि

79. भारतीय शास्त्रीय कला में नर्तन (नृत्य) का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(क) भावों और रसों की अभिव्यक्ति

(ख) शारीरिक व्यायाम

(ग) नैतिक मूल्यों की शिक्षा

(घ) अनुष्ठानिक कार्य

Scanned with OKEN Scanner

80. आचार्य शाङ्गदेव ने नर्तन को किस अपने ग्रंथ में विस्तार से समझाया है?

(क) नाट्यशास्त्र
(ख) संगीतरत्नाकर
(ग) संगीतदर्पण
(घ) रागविभाग

81. दशरूपक के अनुसार 'नृत्य' का क्या अर्थ है?

(क) शारीरिक गति और अभिनय द्वारा भावों की अभिव्यक्ति
(ख) लय पर आधारित अभिनय
(ग) स्वर का प्रयोग
(घ) दृश्य कला का प्रदर्शन

82. 'नृत्य' के संदर्भ में किसे शारीरिक रूप से व्यक्त भावों का प्रदर्शन कहा गया है?

(क) नृत्य
(ख) नृत्य
(ग) नृत्य
(घ) लोकनृत्य

83. भगवान शिव और देवी पार्वती से जुड़े भारतीय नृत्य रूप कौन से हैं?

(क) भरतनाट्यम और ओडिसी
(ख) ताण्डव और लास्य
(ग) कुचिपुडी और कथक
(घ) मोहिनीअट्टम और मणिपुरी

84. नृत्य और नृत्त में क्या मुख्य अंतर है?

(क) नृत्य लय और अंग संचालन पर आधारित है, जबकि नृत्य केवल अभिनय और भावों की अभिव्यक्ति है
(ख) नृत्य व्यक्तिगत प्रदर्शन है, जबकि नृत्य समूह नृत्य है
(ग) नृत्य अभिनय और नाट्य कला से संबंधित है
(घ) नृत्य केवल वाद्ययंत्रों के साथ होता है

85. कौन सा नृत्य रूप भारतीय नृत्य परंपरा में समुदाय की संस्कृति और परंपराओं को जीवित रखने का कार्य करता है?

(क) शास्त्रीय नृत्य
(ख) लोकनृत्य
(ग) समकालीन नृत्य
(घ) नाटक नृत्य

86. निम्नलिखित में से कौन सा लोकनृत्य नहीं है?

(क) भांगड़ा
(ख) गरबा
(ग) कत्थक
(घ) झूमर

87. वायु पुराण के अनुसार नर्तन का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(क) भावों और रसों के माध्यम से गहरी अभिव्यक्ति
(ख) धर्म, अर्थ और कीर्ति की प्राप्ति
(ग) दर्शकों का मनोरंजन
(घ) शारीरिक अभ्यास

88. ताण्डव और लास्य के विशिष्ट रूप किससे जुड़े हुए हैं?

(क) भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी
(ख) भगवान शिव और देवी पार्वती
(ग) भगवान राम और देवी सीता
(घ) भगवान ब्रह्मा और देवी सरस्वती

89. निम्नलिखित में से कौन सा शास्त्रीय नृत्य शैली है?

(क) भांगड़ा
(ख) ओडिसी
(ग) कोलदाही
(घ) झूमर

Scanned with OKEN Scanner

90. 'नृत्य' में किसका सबसे अधिक महत्व है?

(क) लय और अभिनय का संयोजन

(ख) शारीरिक फिटनेस

(ग) कदमों की सटीकता

(घ) परिधान का सजावट

91. 'ऋतुसंहार' काव्य में क्या वर्णित है?

(क) प्रकृति और ऋतुओं का संबंध

(ख) भगवान शिव और पार्वती की कथा

(ग) राम का जीवन संघर्ष

(घ) उर्वशी और पुरूरवा का प्रेम

92. कालिदास के नाटक 'उर्वशी' में किस प्रकार की कहानी है?

(क) देवताओं और इंसानों का मिलन

(ख) रामायण की कथा

(ग) उर्वशी और पुरूरवा का प्रेम

(घ) कृष्ण और राधा का प्रेम

93. कालिदास का नाटक 'अभिज्ञानशाकुंतलम' किस बारे में है?

(क) शाकुंतला और दुष्यंत का प्रेम

(ख) राम और सीता का मिलन

(ग) उर्वशी और पुरूरवा का मिलन

(घ) महाभारत की गाथा

94. कालिदास के नाटक 'मालविकाग्निमित्र' की कहानी किस पर आधारित है?

(क) राजा मालविकाग्निमित्र और उनका शासन

(ख) शाकुंतला और दुष्यंत का मिलन

(ग) रामायण की कथा

(घ) उर्वशी का प्रेम

उत्तर-दर्शिका

प्रश्न क्रमांक	सही विकल्प	प्रश्न क्रमांक	सही विकल्प	प्रश्न क्रमांक	सही विकल्प	प्रश्न क्रमांक	सही विकल्प
1	ग	25	ग	49	घ	73	ख
2	ग	26	ख	50	ख	74	ख
3	ख	27	ख	51	ग	75	ग
4	ख	28	ग	52	ग	76	ग
5	ग	29	ख	53	ख	77	क
6	ख	30	ग	54	क	78	क
7	ख	31	ग	55	ख	79	क
8	ख	32	ख	56	ग	80	ख
9	ख	33	ग	57	ख	81	क
10	क	34	ख	58	ख	82	ग
11	क	35	घ	59	क	83	ख
12	ग	36	ग	60	ग	84	क
13	ख	37	घ	61	घ	85	ख
14	ख	38	ग	62	ख	86	ग
15	ख	39	ग	63	ग	87	ख
16	क	40	ख	64	ग	88	ख
17	ग	41	ख	65	घ	89	ख
18	क	42	क	66	क	90	क
19	ख	43	ख	67	क	91	क
20	ख	44	ग	68	ग	92	ग
21	ख	45	ख	69	क	93	क
22	ख	46	ख	70	क	94	क
23	ख	47	ग	71	ग		
24	ख	48	ख	72	ग		

Scanned with OKEN Scanner

पुस्तक के विषय में

'नाट्य, नाद और भारतीय चेतना' यह पुस्तक भारतीय नाट्यकला, संगीतशास्त्र, और चेतना के गहरे संबंधों का एक गंभीर अध्ययन प्रस्तुत करती है। इसमें स्वाति मुनि की कथा के माध्यम से वाद्य यंत्रों की उत्पत्ति, भारतीय परंपरा का वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तथा सत्-चित्-आनंद की चेतना-समीकरण को विश्लेषित किया गया है। नाट्यशास्त्र की पृष्ठभूमि, उसका आध्यात्मिक एवं सार्वभौमिक उद्देश्य, गीत-संगीत और वाद्य यंत्रों की परस्परता, तथा रागों की रचना जैसे विषयों पर गहन चर्चा की गई है। यह पुस्तक गुरु-शिष्य परंपरा, उत्तर और दक्षिण भारतीय संगीत, तथा चार प्रमुख वाद्य वर्गों की भव्यता को भी विस्तार से समझाता है। कालिदास और भवभूति जैसे महाकवियों के योगदान के साथ-साथ प्राकृत और क्षेत्रीय भाषाओं के विकास का भी विवेचन इसमें मिलता है। यह पुस्तक भारतीय सौन्दर्यशास्त्र के विज्ञान और दर्शन को समझने के इच्छुक विद्यार्थियों, अध्येताओं और जिज्ञासुओं के लिए एक अमूल्य स्रोत है।

Supported by:

Bharath
INSTITUTE OF HIGHER EDUCATION AND RESEARCH
173, Agaram Main Road, Selaiyur, Chennai, Tamil Nadu - 600 073
Learners Today. Leaders Tomorrow.

500+ COLLABORATIONS MOU'S
75+ COUNTRIES & REGIONS ALUMNI NETWORK
300+ FACULTY & STUDENT EXCHANGE COLLABORATIONS
70+ FORMS OF GLOBAL RESEARCH PARTNERSHIPS
250+ INTERNATIONAL FACULTY FROM 50+ COUNTRIES AND REGIONS
20000+ PUBLICATIONS
75+ INTER DISCIPLINARY RESEARCH CENTRES
6 RESEARCH CAPACITY BUILDING INSTITUTES
1st Private University in India obtained international accredations from ABET USA for 4 programs in the year 2018
50+ NATIONAL & INTERNATIONAL AWARDS & RANKINGS

ENGINEERING & TECHNOLOGY | ARTS & SCIENCE | MEDICAL | MANAGEMENT ARCHITECTURE | ALLIED HEALTH SCIENCES LAW | CATERING & HOTEL MANAGEMENT | AGRICULTURE PHARMACY | NURSING

Engineering & Law : 044 - 61116299 / 61116247
Arts & Science : 044 - 61116399 / 044 - 61116377
Allied Health Sciences & Nursing : 044 - 61116215

ADMISSION HELPLINE
1800-419-1441
For more details please visit
www.bharathuniv.ac.in

विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान
Vidya Bharati Uchcha Shiksha Sansthan
H-107a, Sector-12, Noida,
Gautam Buddha Nagar, U.P. 201301
Contact Us : 0120-4338616, 9999694251

किताबवाले
7/31, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110002
वेबसाईट : www.kitabwale.com
ईमेल : kitabwale@gmail.com

ISBN 978-93-49531-87-1